महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे की मुखपत्रिका

समिति संवाद

हर माह १० तारीख को प्रकाशित

पंजीकरण क्र. MAHHIN/2010/48645

वर्ष : १९, जून-जुलाई २०२२ अंक : ६५ वाँ मूल्य : ₹१०/- वार्षिक : ₹१००/-

चाह नहीं देवों के सिर चढ़ूँ । चाह यही देव-रूप बनूँ।

श्यामाप्रसाद मुखर्जी

६ जुलाई १९०१ को कोलकाता के अत्यन्त प्रतिष्ठित परिवार में डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी का जन्म हुआ। उनके पिता सर आशुतोष मुखर्जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे एवम् शिक्षाविद् के रूप में विख्यात थे। डॉ. मुखर्जी ने १९१७ में मैट्रिक किया तथा १९२१ में बी.ए. की उपाधि प्राप्त की।

श्यामाप्रसाद मुखर्जी का भारतीय राजनीति से गहरा नाता हुआ करता था और इन्हें इनकी अलग विचारधारा के लिए जाना जाता था। इन्होंने हमेशा से ही हिंदुत्व की रक्षा करने के लिए अपनी आवाज उठाई थी और इन्होंने अनुच्छेद ३७० का काफी विरोध भी किया था।

उनकी मृत्यु २३ जून १९५३ में हुई।

खुदीराम बोस

खुदीराम का जन्म ३ दिसम्बर १८८९ को पश्चिम बंगाल के मिदनापुर जिले के बहुवैनी नामक गाँव में कायस्थ परिवार में बाबू त्रैलोक्यनाथ बोस के यहाँ हुआ था। उनकी माता का नाम लक्ष्मीप्रिया देवी था। बालक खुदीराम के मन में देश को आजाद कराने की ऐसी लगन लगी कि नौंवी कक्षा के बाद ही पढाई छोड दी और स्वदेशी आन्दोलन में कूद पडे। इसके बाद वे रिवॉल्यूशनरी पार्टी के सदस्य बने और 'वन्देमातरम्' लिखे पर्चे वितरित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी।

मुजफ्फरपुर जेल में ११ अगस्त १९०८ को उन्हें फाँसी पर लटका दिया गया। उस समय उनकी उम्र सिर्फ १९ साल थी।

विवादों की चर्चा में जग जमते देखें।
आओ संवाद करें युगों को पल में पिघलते देखें।

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, पुणे
की मुखपत्रिका

समिति संवाद

वर्ष : १९	जून-जुलाई २०२२	
अंक : ६५ वाँ	मूल्य रु. १०/-	वार्षिक रु. १००/-

* संपादक *

ज. गं. फगरे

- संपादकीय पता -

महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति,
हिंदी भवन, १४३९, शुक्रवार पेठ,
बाजीराव रोड, शेवडे गली,
पुणे : ४११ ००२ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनि : ०२०-२४४५३१५९
मोबाईल : ९७६३६२९२४३
ई-मेल : jgfagre@gmail.com
website - https://mrpspune.org/index

अनुक्रम

- संपादकीय... २
- विश्व विजेता संन्यासी : विवेकानन्द ३
- जीवन भर विसंगतियों से जूझते रहे ५
- प्रसिद्ध सन्तूरवादक पं. शिवकुमार शर्मा ७
- हिंदी-युग प्रवर्तक, महावीर प्रसाद द्विवेदी ८
- श्यामाप्रसाद मुखर्जी ९
- माँ ११
- जीवन के अग्निपथ पर १२
- सन्नाटे में रोशनी है। १३
- विशुद्ध राष्ट्रभाषा परिचय - वचन १४
- अंडमान का हिन्दी बाल साहित्य १५
- ज्ञानांश १७
- पत्राचार १९
- अनमोल वचन २०
- व्यंग्यकार - हरिशंकर परसाई २१
- समरसता का नंदादीप २४
- जान लो, भगवद्गीता २५
- सूर-साहित्य की प्रासंगिकता २६
- अनमोल वचन २७
- सुविचार २८
- शहीद की माँ २९
- पं. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी ३१

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार संबंधित लेखक के हैं । संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

मुद्रक- प्रकाशक : जयराम गंगाधर फगरे द्वारा महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति के लिए पालवी मुद्रणालय, ९८५ सदाशिव पेठ, पुणे ३० से मुद्रित करवाकर हिंदी भवन, १४३९, शुक्रवार पेठ, बाजीराव रोड, शेवडे गल्ली, पुणे ४११००२ (महाराष्ट्र) से प्रकाशित की गई । **संपादक :** जयराम गंगाधर फगरे.

Printed & Published by : J. G. Fagare on behalf of Maharashtra Rashtrabhasha Prachar Samiti & Printed at Palvi Mudranalaya, 985 Sadashiv Peth, Pune-30 and Published at 1439, Shukrawar Peth, Bajirao Road, Pune-2.

Editor : Jayram Gangadhar Fagare

कोई नहीं है गैर...!

संपादकीय...

'लोकशाही' का अर्थ है- सर्व समान, सर्व एक, एक न्याय सबको, लोग किसी भी धर्म, पंथ, जाति के हों परंतु न्याय सबको एक। जब हमने एक बार भारत लोकशाही प्रधान देश संविधान बनाकर मान्य किया तो यहाँ रहनेवाले सभी एक ही ध्वज के नीचे, एकही राष्ट्रगीत के पुरस्कर्ता, सबके विकास में अपना विकास माननेवाले होने चाहिये। विश्व के सभी देश अपनी अपनी सीमाओं का जरूर रक्षण करें परंतु दूसरोंका क्षेत्र अपने में लाने की कोशिश न करें। रक्षा-दल हों परंतु आमने-सामने खडा कर युद्धभूमि तैयार न करें।

परमेश्वर एक है। नाम अलग-अलग हो सकते हैं। अलग-अलग नामों से उस देवत्वका स्मरण किया जाता है। मंदिर, मस्जिद, गिरिजा घर जो जिस नामसे भाव-भावना व्यक्त करना चाहते हैं जरूर करें, विरोध करने का सवाल ही नहीं। मेरे ही इष्ट देवता का नाम, जपमाला ओढने की अनिवार्यता नहीं करनी चाहिये। हम जिस धर्म-भूमि में समाज में रहते हैं- उसके रीति-रिवाजों का पालन होना ही चाहिये। आग्रह-दुराग्रह छोडना चाहिये। प्राबल्य जिसका हो उसे मानना ही चाहिये। मैं स्वतंत्र हूँ फिर भी अलग जाति-धर्म के होने का दावा व्यर्थ है। जिसमें हमारे समाज पुरूषों का लताड़ा जंगली व्यवहार किये, उनको भारत कभी मानेगा नहीं,उसका चिह्न भी मिटाना चाहिये। गडे-मुर्दे उठाने से कुछ भी मिलेगा नहीं। पुरानी भारतीय संस्कृति का रक्षण होना ही चाहिये। जिनको हम मानते थे, जिनके बलपर हम पले, बढे उनको लताडकर लाभ के लिए उन्हीं के चरण छूना, उन्हें मनाना यह इन्सानियत नहीं है। कोई नहीं है गैर-सही है परंतु गलत और सही में फर्क होता है। गांधी देश घूमे और देश को समझनेवालों को देश घूमने की सूचना दी। भारतीय जनता, भारत देश को जानने के लिए परमहंसजीने विवेकानंद को सूचना दी थी- इसमें सब कुछ आया।

जन्मत: कोई काला, गोरा जैसा भी हो, वह मनुष्य है, उसे स्वीकारना हमारा धर्म है। भेदभाव करके दूर रखना गलत है।

गैर को सुधारना और नये को लोकशाही का संदेश देना मनुष्य के नाते बर्ताव करने का मार्गदर्शन करना हम अपना कर्तव्य माने।

बहुत वर्षों से भारत को, जानकार सूत्रधार, मार्गदर्शक नहीं मिला था, असाध्य, असम्भव ३७० धारा हटाने जैसा कठिन काम करनेवाला दृष्टि में नहीं था, सौभाग्य से परमपूज्य नरेन्द्रजी मोदी पंतप्रधान मिले, देश का भाग्य फलित हो रहा है। हम उनका समर्थन करें और शुभेच्छा दें।

अंत में कहना चाहूँगा कि कोई नहीं है गैर, हम अच्छे को अच्छा कहें और बुरे को त्यागने का शक्तिभर प्रयत्न करें। सारांश में कहें 'कोई नहीं है गैर'। शुभम्

भवदीय,

- ज. गं. फगरे

विश्व विजेता संन्यासी : स्वामी विवेकानन्द

- डॉ. प्रभु चौधरी

हमारे सामने यही एक महान आदर्श है और हर एक को इसके लिए तैयार रहना चाहिए- वह आदर्श है-भारत की विश्व पर विजय। उससे छोटा कोई आदर्श न चलेगा। हम सभी को इसके लिए तैय्यार रहना चाहिए और इसे प्राप्त करने का पूरा प्रयास करना चाहिए।... ''उठो, भारत! तुम अपनी आध्यात्मिकता द्वारा जगत पर विजय प्राप्त करो।''

स्वामी विवेकानन्द के विचारों के अनुसार, मेरी दृढ धारणा है कि तुममें अन्धविश्वास नहीं है। तुममें वह शक्ति विद्यमान है, जो संसार को हिला सकती है, धीरे-धीरे और भी अन्य लोग आयेंगे। साहसी शब्द और उससे अधिक साहसी कर्मों की हमें आवश्यकता है। 'उठो! उठो! संसार दु:ख से जल रहा है। क्या, तुम सो सकते हो?' हम बार-बार पुकारें, जब तक सोते हुए देवता न जाग उठें, तब तक अन्तर्यामी देव उस पुकार का उत्तर न दें। जीवन में और क्या है? इससे महान कर्म क्या है?

अकेले रहो, अकेले रहो। जो अकेला रहता है, उसका किसी से विरोध नहीं होता, वह किसी की शान्ति भंग नहीं करता, न दूसरा कोई उसकी शान्ति भंग करता है। जो पवित्र तथा साहसी है, वही जगत में सब कुछ कर सकता है। माया-मोह से प्रभु सदा तुम्हारी रक्षा करें। मैं तुम्हारे साथ काम करने के लिए सदैव प्रस्तुत हूँ एवं लोग यदि स्वयं अपने मित्र रहें तो प्रभु भी हमारे लिए सैकडों मित्र भेजेंगे, आत्मैव हात्मनो बन्धु।

अफसोस इस बार का है कि यदि मुझे जैसे दो-चार व्यक्ति भी तुम्हारे साथी होते- तमाम संसार हिल उठता। क्या करूँ धीरे-धीरे अग्रसर होना पड रहा है। तूफान मचा दो तूफान!

स्वामी विवेकानन्द का आदर्श था, विश्व विजयी भारत। उन्होंने अपनी ओजस्वी वाणी में कहा था- अब इंग्लैण्ड, यूरोप और अमेरिका पर विजय पाना, यही हमारा महाव्रत होना चाहिए। इसी से देश का भला होगा। विस्तार ही जीवन का केन्द्र है। हमें सारी दुनिया में अपने आध्यात्मिक विचारों का प्रचार करना ही होगा।वे बार-बार कहते थे, कायरता छोडो। निद्रा त्यागो। यह वीर भोग्या वसुंधरा है। वीर बनो। याद रखो।

''हमें सम्पूर्ण संसार जीतना है। हाँ, हमें यह करना ही होगा। भारत को अवश्य ही संसार पर विजय प्राप्त करना होगा। इसकी अपेक्षा किसी छोटे आदर्श से मुझे कभी संतोष न होगा।... इसके सिवा कोई विकल्प नहीं है।''

उन्होंने कहा अपने कुएँ में रहकर हम महान बन नहीं सकते। अपने किलों में बैठकर लडना पराजय को निमंत्रण देना है। वे कहते थे-

नवयुवकों! मैं विशेषकर तुम्हीं को इसे याद करने को कहता हूँ। हमें बाहर जाना ही होगा। दूसरा कोई उपाय नहीं। अवश्यमेव इसे करो या मरो। राष्ट्रीय जीवन, सतेज और प्रबुद्ध जीवन के लिए बस यही एक शर्त है कि भारतीय विचार विश्व पर विजय प्राप्त करें।

स्वामी विवेकानन्द जानते थे कि भारत के विश्व विजयी बनने के मार्ग में सबसे बडी बाधा हमारी आपसी फूट है। यह समाज विभिन्न जातीय, साम्प्रदायिक और भाषाई क्षुद्रताओं में बटा हुआ है। राष्ट्रीय गौरव और महानता का महामंत्र है, एकता। भारतीयता पर गर्व। संकीर्ण स्वार्थों से ऊपर उठकर सभी जातियों को समान मानते हुए, सभी धर्मों का पूरी निष्ठा के साथ आदर करते हुए, हम सब गर्व से कहें कि हम भारतीय है। स्वामी विवेकानन्द का जयघोष था- ''गर्व से कहो मैं भारतीय हूँ और प्रत्येक भारतीय मेरा भाई है। बोलो कि अज्ञानी भारतवासी, दरिद्र भारतवासी, ब्राह्मण भारतवासी, चाण्डाल भारतवासी मेरा भाई है। भारतवासी मेरे प्राण हैं। भारत का समाज मेरी शिशु-शैय्या और यौवन का उपवन है। भाई, बोलो कि भारत की मिट्टी मेरा स्वर्ग है।''

विश्व विजय का यही मार्ग है, कि भारत संगठित हो, उसमें एकता की भावना हो और वह अपने आध्यात्मिक पथ पर बढता चले।

विवेकानन्द ने कहा था-हमारे पूर्व पुरूषों ने प्राचीनकाल में बहुत बडे-बडे काम किए है, पर हमें उनकी अपेक्षा भी उच्चतर जीवन का विकास करना होगा और उसकी अपेक्षा और भी महान कार्यों की ओर अग्रसर होना होगा। अब पीछे हटकर अवनति को प्राप्त होना, यह कैसे हो सकता है। ऐसा कभी नहीं हो सकता। अतएव आगे बढकर महान कार्यों का अनुष्ठान करो।

केवल पुरानी उपलब्धियों का गुणगान करना ही पर्याप्त नहीं है। एक जीवंत देश के नाते उन उपलब्धियों को पुन: अर्जित करने के पश्चात नए क्षितिजों की ओर बढना है, नई उपलब्धियों की ओर बढना है। हमारे महापुरूषों ने जो काम किए, हमें उनसे आगे सोचना है, उनसे भी बडे काम करना है, तभी हम उन वीर पुरूषों, दिव्य पुरूषों की संतान कहलाने के हकदार होंगे।

स्वामी विवेकानन्द के इसी महामंत्री को हमें अभिनव भारत का दार्शनिक आधार बनाना होगा।

भारत का उद्देश्य संपूर्ण विश्व को, सारी मानव जाति को वेदांत का प्रकाश पहुँचाना है। संसार के समस्त मनुष्यों को सिखाना है कि वे सभी धर्मों का सम्मान करें। यही भारत का आध्यात्मिक लक्ष्य होना चाहिए।

स्वामी विवेकानन्द ने भारत की सांस्कृतिक दार्शनिक धार्मिक श्रेष्ठता का ध्वज विश्व के आकाश में शान से फहराया, हम उस ध्वज को उसी शान से फहराते हुए, आर्थिक और सैनिक रूप से भी भारत का ध्वज विश्व आकाश में फहराये-यही सच्ची राष्ट्र वन्दना होगी। और ऐसा करते समय हम अपने राष्ट्रीय मूल्यों, नैतिक आदर्शों, सांस्कृतिक परंपराओं को नहीं भूलें-यही राष्ट्र के लिए एक सम्पूर्ण जीवन होगा स्वामीजी ने कहा था-दुर्बल मस्तिष्क कुछ नहीं कर सकता, हमको अपने मस्तिष्क को बल्वान बनाना होगा। प्रथम तो हमारे युवकों को बलवान बनाना होगा, धर्म पीछे आएगा। बलवान शरीर से अथवा मजबूत पुट्ठो से तुम कृष्ण की महती प्रतिमा और महान तेजस्विता को अधिक अच्छी तरह समझोगे।

भारत एक विश्व शक्ति, विश्व विजेता बने-यही स्वामी विवेकानन्द के अभिनव भारत की परिकल्पना थी। इसे साकार करने का संकल्प हम लें। उत्तिष्ठ, जागृत, प्राप्यवरान्निबोधत।

('भाषा-पीयूष' मार्च २०२२ अंक से)

जीवन भर विसंगतियों से जूझते रहे निराला

- डॉ. चन्द्र रेखा

सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' का जन्म बंगाल की महिषादल रियासत (जिला मेदिनीपुर) में माघ शुक्ल ११, संवत् १९५५, तदनुसार २१ फरवरी, सन् १८९९ में हुआ था। वसंत पंचमी पर उनका जन्मदिन मनाने की परंपरा १९३० में प्रारंभ हुई। निराला के जीवन की सबसे विशेष बात यह है कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी उन्होंने सिद्धांत त्यागकर समझौते का रास्ता नहीं अपनाया, संघर्ष का साहस नहीं गंवाया।

वसंत ऋतु की दस्तक के साथ-साथ ही निराला जी की स्मृतियां, उपलब्धियां एवं कृतियां एक बार फिर साहित्यिक मानस में उभर आती हैं। सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला, जयशंकर प्रसाद, सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा के साथ हिन्दी साहित्य में छायावाद के प्रमुख स्तंभ माने जाते हैं। उन्होंने कहानियाँ, उपन्यास और निबंध भी लिखे हैं किन्तु उनकी ख्याति विशेषरूप से कविता के कारण ही है। सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला का जन्म बंगाल की महिषादल रियासत (जिला मेदिनीपुर) में माघ शुक्ल ११, संवत् १९५५, तदनुसार २१ फरवरी, सन् १८९९ में हुआ था। वसंत पंचमी पर उनका जन्मदिन मनाने की परंपरा १९३० में प्रारंभ हुई। उनका जन्म मंगलवार को हुआ था। जन्म कुण्डली बनानेवाले पंडित के कहने से उनका नाम सूरज कुमार रखा गया। उनके पिता पंडित रामसहाय तिवारी उन्नाव (बैसवाडा) के रहनेवाले थे और महिषादल में सिपाही की नौकरी करते थे। वे मूल रूप से उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले के गढकोला नामक गाँव के निवासी थे।

शिक्षा

निराला की शिक्षा वहीं बंगाली माध्यम से शुरू हुई। हाईस्कूल पास करने के पश्चात् उन्होंने घर पर ही संस्कृत और अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन किया। हाईस्कूल करने के पश्चात् वे लखनऊ और उसके बाद गढकोला (उन्नाव)आ गये।प्रारम्भ से ही रामचरितमानस उन्हें बहुत प्रिय था। वे हिन्दी, बंगला, अंग्रेजी और संस्कृत भाषा में निपुण थे और श्री रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द और श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर से विशेष रूप से प्रभावित थे। दसवीं कक्षा में पहुँचते-पहुँचते इनकी दार्शनिक रुचि का परिचय मिलने लगा। निराला स्वच्छन्द प्रकृति के थे और स्कूल में पढने से अधिक उनकी रुचि घूमने, खेलने, तैरने और कुश्ती लडने इत्यादि में थी। संगीत में उनकी विशेष रुचि थी। अध्ययन में उनका विशेष मन नहीं लगता था। इस कारण उनके पिता कभी-कभी उनसे कठोर व्यवहार करते थे जबकि उनके हृदय में अपने एकमात्र पुत्र के लिये विशेष स्नेह था।

विवाह

पन्द्रह वर्ष की अल्पायु में निराला का विवाह मनोहरा देवी से हो गया। रायबरेली जिले में डलमऊ के श्री रामदयाल की पुत्री मनोहरा देवी सुन्दर और शिक्षित थीं, उनको संगीत का अभ्यास भी था। पत्नी के जोर देने पर ही उन्होंने हिन्दी सीखी। इसके बाद अतिशीघ्र ही उन्होंने बंगला के बजाय हिन्दी में कविता लिखना शुरू

कर दिया। बचपन के नैराश्य और एकाकी जीवन के पश्चात् उन्होंने कुछ वर्ष अपनीपत्नी के साथ सुख से बिताये, किन्तु यह सुख ज्यादा दिनों तक नहीं टिका। बाद में उनकी पुत्री जो कि विधवा थी, की भी मृत्यु हो गयी। वे आर्थिक विषमताओं से भी घिरे रहे। ऐसे समय में उन्होंने विभिन्न प्रकाशकों के साथ प्रूफरीडर के रूप में काम किया, उन्होंने 'समन्वय' का भी सम्पादन किया।

कार्यक्षेत्र

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की पहली नियुक्ति महिषादल राज्य में ही हुई। उन्होंने १९१८ से १९२२ तक यह नौकरी की। उसके बाद संपादन, स्वतंत्र लेखन और अनुवाद कार्य की ओर प्रवृत्त हुए। १९२२ से १९२३ के दौरान कोलकाता से प्रकाशित 'समन्वय' का संपादन किया, १९२३ के अगस्त से मतवाला के संपादक मंडल में कार्य किया। इसके बाद लखनऊ में गंगा पुस्तक माला कार्यालय में उनकी नियुक्ति हुई जहाँ वे संस्था की मासिक पत्रिका सुधा से १९३५ के मध्य तक संबद्ध रहे।

१९३५ से १९४० तक का कुछ समय उन्होंने लखनऊ में भी बिताया। इसके बाद १९४२ से मृत्यु पर्यन्त इलाहाबाद में रहकर स्वतंत्र लेखन और अनुवाद कार्य किया। उनकी पहली कविता जन्मभूमि प्रभा नामक मासिक पत्र में जून १९२० में, पहला कविता संग्रह १९२३ में अनामिका नाम से तथा पहला निबंध बंग भाषा का उच्चारण अक्टूबर १९२० में मासिक पत्रिका सरस्वती में प्रकाशित हुआ।

अपने समकालीन अन्य कवियों से अलग उन्होंने कविता में कल्पना का सहारा बहुत कम लिया है और यथार्थ को प्रमुखता से चित्रित किया है। वे हिन्दी में मुक्तछंद के प्रवर्तक भी माने जाते हैं। १९३० में प्रकाशित अपने काव्यसंग्रह परिमल की भूमिका में वे लिखते हैं...

लेखनकार्य

निराला ने १९२० ई.के. आसपास से लेखन कार्य आरंभ किया। उनकी पहली रचना 'जन्मभूमि' पर लिखा गया एक गीत था। लंबे समय तक निराला की प्रथम रचना के रूप में प्रसिद्ध 'जूही की कली' शीर्षक कविता, वस्तुत: १९२१ ई.के आसपास लिखी गयी थी तथा १९२२ ई.में पहली बार प्रकाशित हुई थी। कविता के अतिरिक्त कथासाहित्य तथा गद्य की अन्य विधाओं में भी निराला ने प्रभूत मात्रा में लिखा है।

प्रकाशित कृतियाँ

* **काव्यसंग्रह :** अनामिका (१९२३), परिमल (१९२९), गीतिका (१९३६), अनामिका (द्वितीय), (१९३८) तुलसीदास (१९३९), कुकुरमुत्ता (१९४२), अणिमा (१९४३), बेला (१९४३), नये पत्ते (१९४६), अर्चना (१९५०), आराधना (१९५३), गीत कुंज (१९५६), सांध्य काकली, अपरा (संचयन) (१९५६).

* **उपन्यास :** अप्सरा (१९३१), अलका (१९३३) प्रभावती (१९३६), निरुपमा (१९३६), कुल्ली भाट (१९३८-३९), बिल्लेसुर बकरिहा (१९४२), चोटी की पकड (१९४६), काले कारनामें (१९५०), अपूर्ण, चमेली (अपूर्ण) इन्दुलेखा (अपूर्ण).

* **कहानी संग्रह :** लिली (१९३४) सखी (१९३५) सुकुल की बीवी (१९४१) चतुरी चमार (१९४५) सखी संग्रह का ही नये नाम से पुनर्प्रकाशन, देवी (१९४८) पूर्व प्रकाशित संग्रहों से संचयन, एकमात्र नयी कहानी जान की!

* **निबन्ध-आलोचना :** रवीन्द्र कविता कानन (१९२९) प्रबंध पद्म (१९३४) प्रबंध प्रतिमा (१९४०) चाबुक (१९४२) चयन (१९५७) संग्रह (१९६३).

* **पुराण कथा :** महाभारत (१९३९) रामायण की अन्तर्कथाएँ (१९५६).

* **बालोपयोगी साहित्य :** भक्त ध्रुव (१९२६) भक्त प्रहलाद (१९२६) भीष्म (१९२६) महाराणा प्रताप (१९२७) सीखभरी कहानियाँ, (ईसप की नीतिकथाएँ) (१९६९).

* **अनुवाद :** रामचरितमानस (विनय भाग, १९४८ (खडीबोली हिन्दी में पद्मानुवाद) आनंद मठ (बाङ्ला से गद्यानुवाद) विष वृक्ष, कृष्णकांत का वसीयतनामा,

कपालकुंडला, दुर्गेश नन्दिनी, राज सिंह, राजरानी, देवी चौधरानी, युगलांगुलीय, चन्द्रशेखर, रजनी, श्रीरामकृष्णवचनामृत (तीन खण्डों में) परिव्राजक, भारत में विवेकानंद, राजयोग (अंशानुवाद)

* **रचनावली :** निराला रचनावली नाम से ८ खण्डों में पूर्व प्रकाशित एवं अप्रकाशित सम्पूर्ण रचनाओं का सुनियोजित प्रकाशन (प्रथम संस्करण–१९८३)

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' की काव्यकला की सबसे बडी विशेषता है चित्रण–कौशल। आंतरिक भाव हो या बाह्य जगत के दृश्य–रूप, संगीतात्मक ध्वनियां हो या रंग और गंध, सजीव चरित्र हों या प्राकृतिक दृश्य, सभी अलग–अलग लगनेवाले तत्त्वों को घुला–मिलाकर निराला ऐसा जीवंत चित्र उपस्थित करते हैं कि पढनेवाला उन चित्रों के माध्यम से ही निराला के मर्म तक पहुँच सकता है। निराला के चित्रों में उनका भावबोध ही नहीं, उनका चिंतन भी समाहित रहता है। इसलिए उनकी बहुत–सी कविताओं में दार्शनिक गहराई उत्पन्न हो जाती है। इस नए चित्रण–कौशल और दार्शनिक गहराई के कारण अक्सर निराला की कविताएँ कुछ जटिल हो जाती हैं, जिसे न समझने के नाते विचारक लोग उन पर दुरूहता आदि का आरोप लगाते हैं। उनके किसान, बोध ने ही उन्हें छायावाद की भूमि से आगे बढकर यथार्थवाद की नई भूमि निर्मित करने की प्रेरणा दी। विशेष स्थितियाँ, चरित्रों और दृश्यों को देखते हुए उनके मर्म को पहचानना और उन विशिष्ट वस्तुओं को ही चित्रण का विषय बनाना, निराला के यथार्थवाद की एक उल्लेखनीय विशेषता है। निराला पर अध्यात्मवाद और रहस्यवाद जैसी जीवन–विमुख प्रवृत्तियों का भी असर है। इस असर के चलते वे बहुत बार चमत्कारों से विजय प्राप्त करने और संघर्षों का अंत करने का सपना देखते हैं। निराला की शक्ति यह है कि वे चमत्कार के भरोसे अकर्मण्य नहीं बैठ जाते और संघर्ष की वास्तविक चुनौती से आँखें नहीं चुराते।

(हरिगंधा फरवरी २०२२ अंक से)

प्रसिद्ध सन्तूरवादक पं. शिवकुमार शर्मा

पं. शिवकुमार शर्मा (जन्म १३ जनवरी १९३८) प्रख्यात भारतीय सन्तूर वादक हैं। सन्तूर एक कश्मीरी लोकवाद्य होता है। शिवकुमार शर्मा ने कई संगीतकारों जैसे जैकिर हुसैन और हरिप्रसाद चौरसिया के साथ मिलकर काम किया है।

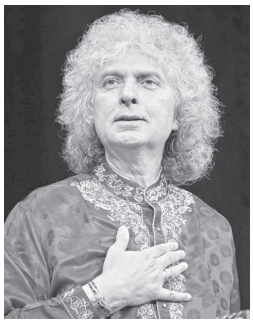

पं. शिवकुमार शर्मा सन्तूर के महारथी होने के साथ–साथ एक अच्छे गायक भी थे। एकमात्र इन्हें सन्तूर को लोकप्रिय शास्त्रीय वाद्य बनाने में पूरा श्रेय जाता है। इन्होंने संगीत साधना आरम्भ करते समय कभी सन्तूर के विषय में सोचा भी नहीं था, इनके पिता ने ही निश्चय किया कि ये सन्तूर बजाया करें। इनका प्रथम एकल एल्बम १९६० में आया।

शिवकुमार शर्मा को कई राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका हैं। सन् १९८५ में उन्हें अमरिका के बोल्टिमोर शहर की सम्माननीय नागरिकता प्रदान की गई। सन् १९८६ में शिवकुमार शर्मा को 'संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। सन् १९९१ में उन्हें पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया। सन् २००१ में उन्हें 'पद्मविभूषण पुरस्कार' से सम्मानित किया गया।

१० मे २०२२ को कार्डियक अरेस्ट से पीडित होने के बाद उनका निधन हो गया।

हिंदी-युग प्रवर्तक, महावीर प्रसाद द्विवेदी

- राम गोपाल राही

महावीर प्रसाद द्विवेदी हिंदी के महान साहित्यकार पत्रकार एवं युग प्रवर्तक थे। उन्होंने हिंदी साहित्य की अविस्मरणीय सेवा की और अपने युग के साहित्यिक और सांस्कृतिक चेतना को दिशा एवं दृष्टि प्रदान की।

महावीर प्रसाद द्विवेदी

महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने लगभग २० वर्ष तक हिंदी की प्रसिद्ध पत्रिका सरस्वती का संपादन किया था। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी हिंदी साहित्य में एक नवीन युग प्रवर्तक थे जिनसे उनके नाम पर द्विवेदी युग की संज्ञा दी गई। सरस्वती पत्रिका का संपादन करते हुए इन्होंने हिंदी की महान सेवा की और हिंदी को अनेक नए कवि और निबंधकार साहित्यकार दिए। हिंदी भाषा को सुव्यवस्थित करने और उसका व्याकरण सम्मत स्वरूप निर्धारित करने में द्विवेदी जी की विशेष भूमिका रही। हिन्दी गद्य में छाई हुई अराजकता को दूर करने में भी द्विवेदी जी ने अपना योगदान दिया। इन्हीं संदर्भों के चलते ब्रजभाषा के स्थान पर खडी बोली को हिंदी काव्यभाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने का श्रेय आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी को ही प्राप्त है।

सृजन–आचार्य महावीर प्रसाद जी द्विवेदी का स्वयं सृजन। द्विवेदी जी ने ५० से अधिक ग्रंथों की रचना की जो विविध विषयों से संबंधित हैं।

(१) उनके प्रमुख ग्रंथों का विवरण कुछ इस प्रकार हैं। काव्य संग्रह, काव्य मंजूषा, कविता, कलाप, सुमन।

(२) **आलोचना** : रसज्ञ रंजन, हिंदी, नवरंग, साहित्य सीकर, नाट्यशास्त्र, विचार विमर्श, साहित्य संदर्भ कालिदास की निरंकुशता, कालिदास एवं उनकी कविता, साहित्य लाभ, विज्ञान वार्ता, कोविद कीर्तन, दृश्य दर्शन, समालोचना, समुच्चय, नैषद चरित चर्चा, कौटिल्य कुठार, वनिता विलास।

(३) **अनुदित रचनाएँ** : वेकन विचार माला, मेघदूत, विचार रत्नावली, कुमारसंभव, गंगा लहरी, किरातार्जुनीय, हिंदी महाभारत, रघुवंश, शिक्षा, स्वाधीनता, विनय विनोद

आचार्य जी के निबंध इनके कई निबंध सरस्वती पत्रिका में तथा अन्य पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं। कुछ अन्य रचनाएँ–जल चिकित्सा, संपत्ति शास्त्र, वक्तृत्व कला।

संपादन – १९०३ से सरस्वती में संपादक नियुक्त हुए। आचार्य महावीर प्रसाद जी की भाषागत विशेषताएँ– आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के निबंधों की भाषा विषयानुकूल मिलती है।

आलोचनात्मक निबंधों में शुद्ध परिनिष्ठित, संस्कृत तत्सम शब्दावली से युक्त भाषा का प्रयोग है–

तो भावनात्मक निबंधों में काव्यात्मक भाषा दिखाई पडती है। द्विवेदी जी ने स्थान स्थान पर संस्कृत की सूक्तियाँ के प्रयोग से भाषा को प्रभावशाली बनाने में सफलता प्राप्त की है। द्विवेदी जी मुहावरेदार भाषा का प्रयोग करने में सिद्धहस्त थे। महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की भाषा में संस्कृत शब्दों की बहुलता है, तथा उर्दू एवं अंग्रेजी के प्रचलित शब्द भी उनकी

भाषा में प्रयुक्त हुए हैं। वास्तव में वह व्यावसायिक भाषा के पक्षधर थे और ऐसी भाषा का प्रयोग करते थे जो नित्य प्रति के व्यवहार में आती है। जिसे समझने में किसी को भी कठिनाई न हो।

महावीर प्रसाद द्विवेदी को लेखन की शैली गत विशेषताएँ–

(१) **भावनात्मक शैली** का प्रयोग उनके प्रति संबंधित निबंधों में प्रचुरता से हुआ है। इनमें कोमलकांत मधुर पदावली के साथ–साथ अनुप्रास की छटा सर्वत्र विद्यमान है। ऐसे स्थलों पर भाषा में अलंकारिक छटा का समावेश हुआ है– यथा ''कुमकुम मिश्रित चंदन के सदृश्य उन्हीं में लालिमा मिली हुई सफेद किरणों से चंद्रमा पश्चिम दिग्वधू का श्रृंगार कर रहा है।''

(२) **गवेशणात्मक शैली :** इस शैली का प्रयोग महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने अपने साहित्यिक तथा कवि कर्तव्य, कालिदास की निरंकुशता आदि में किया है। इसमें वाक्य कसे हुए हैं तथा संस्कृत बाहुल्य पदावली का प्रयोग है। इन निबंधों में गंभीरता का पुट है तथा विषय प्रतिपादन में विश्लेषण एवं तर्क की प्रधानता है।

(३) **विचारात्मक शैली :** विचारात्मक शैली में लिखे हुए निबंध विचार प्रधान हैं जिनमें शुद्ध परिनिष्ठित तत्सम शब्दोंवाली हिंदी का प्रयोग हुआ है। जिसमें वाक्य लंबे किंतु विचार सूत्रों के युक्त है। यथा– जो प्रतापी पुरूष अपने तेज से अपने शत्रु को पराभव करने की शक्ति रखते हैं उनके अग्रगामी सेवक भी कम पराक्रमी नहीं होते।

(४) **वर्णनात्मक शैली :** आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदीजी ने निबंधों में शैली का प्रयोग किया है। किसी स्थान घटना या तथ्य का वर्णन करना उनका उद्देश्य है, वहाँ वर्णनात्मक की प्रमुखता है। आत्मकथाएँ, निबंधों में भी यही शैली दिखाई पडती है। दंड देव का आत्म निवेदन, हंस संदेश, नामक निबंधों में वर्णनात्मक शैली का प्रयोग है।

श्यामाप्रसाद मुखर्जी

जन्म : ६ जुलाई १९०१, कोलकाता
मृत्यु : २३ जून १९५३

६ जुलाई १९०१ को कोलकाता के अत्यन्त प्रतिष्ठित परिवार में डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी का जन्म हुआ। उनके पिता सर आशुतोष मुखर्जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे एवं शिक्षाविद् के रूप में विख्यात थे। महानता के सभी गुण उन्हें विरासत में मिले थे।

डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने कर्मक्षेत्र के रूप में १९३९ से राजनीति में भाग लिया और आजीवन इसी में लगे रहे। उन्होंने गांधीजी व कांग्रेस की नीति का विरोध किया, जिससे हिन्दुओं को हानि उठानी पडी थी। सन् १९४४ में हिन्दू महासभा का अध्यक्ष बनाये गये। सन् १९४७ में अंतरिम सरकार के केन्द्रीय मंत्रिमंडल में शामिल हुए। सन् १९५० में ६ अप्रैल को मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दे दिया और आजादी के बाद पहले राज्य नेता बने जिन्होंने त्यागपत्र दिया।

(५) **हास्य व्यंग** की शैली–महावीर प्रसाद द्विवेदी के निबंधों में स्थान स्थान पर हास्य व्यंग का समावेश है। विशेष रूप से सामाजिक कुरीतियाँ एवं अंधविश्वासों पर वह हास्य व्यंग शैली में प्रहार करते हैं। ऐसे स्थलों पर शब्द विधान सरल तथा वाक्य छोटे छोटे किंतु कसे हुए होते हैं। इस शैली का एक उदाहरण–म्युनिसिपल्टी के चेयरमैन श्रीमान बुचूशाह है, बाप दादों के कमाई का लाखों रूपया आपके घर में भरा है। पढे–लिखे आप राम का नाम है।

समझना होगा हिंदी भाषा का संस्कार एवं परिष्कार करनेवाले महावीर प्रसाद द्विवेदी जो निश्चय ही हिंदी के महान साधक थे।

महावीर प्रसादजी की द्विवेदी जी हिंदी, संस्कृत, गुजराती, मराठी और अंग्रेजी के जानकार थे।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने हिंदी के उत्थान के लिए जो कुछ किया उस पर देश के सभी हिंदी प्रेमियों को तथा हर हिन्दुस्तानी को गर्व होना चाहिए। कहानी, उपन्यास भी इनके विधा रही है, विषय निबंध आलोचना और कविता भी।

महावीर प्रसाद द्विवेदी जी भारतीय स्वाधीनता आंदोलन से प्रेरित हुए, इनमें बहुत अधिक देश प्रेम था।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का महत्त्वपूर्ण कार्य– हिंदी साहित्य की सेवा करनेवालों में द्विवेदी जी का विशेष स्थान हैं। महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की अनुपम साहित्यिक सेवाओं के कारण ही उनके समय को द्विवेदी युग के नाम से पुकारा जाता है।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी का मानना था भारतेंदु युग में लेखकों का शुद्धता की ओर ध्यान नहीं था। भाषा में व्याकरण के नियमों तथा विराम चिह्न आदि की कोई परवाह नहीं की जाती थी। भाषा में आशा क्रिया इच्छा क्रिया, जैसे प्रयोग दिखाई पडते हैं।

(१) महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भाषा के इस स्वरूप को देखा और शुद्ध करने का संकल्प किया तथा उन्होंने अशुद्धियों की ओर ध्यान आकर्षित किया और लेखकों को शुद्ध तथा परिमार्जित भाषा लिखने की प्रेरणा दी।

(२) महावीर प्रसाद द्विवेदी ने खडी बोली को कविता के लिए विकसित करने का कार्य किया। उन्होंने स्वयं खडी बोली में कविता लिखी और अन्य कवियों को भी उत्साहित किया। श्री मैथिलीशरण गुप्त अयोध्या सिंह उपाध्याय जैसे खडी बोली से श्रेष्ठ कवि उन्हें के प्रयासों का परिणाम समझा जाता है।

(३) महावीर प्रसाद द्विवेदी ने नए नए विषयों में हिंदी साहित्य को संपन्न बनाया। उन्हीं के प्रयासों से हिंदी में अन्य भाषाओं के ग्रंथों के अनुवाद हुए तथा हिंदी संस्कृत के कवियों पर आलोचनात्मक निबंध लिखे गए।

*** शेष विशेष :** महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की साहित्यिक कृतियां विभिन्न विषयों पर है। द्विवेदी जी की कुछ रचनाएँ सामाजिक, राजनीति दृष्टि से भी थी। महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के आविर्भाव का समय अंग्रेजी शासन सत्ता के चरमोत्कर्ष का समय था। साहित्यिक दृष्टि से द्विवेदी जी का समय हिंदी भाषा और शैली के संघर्ष का युग था। साधारण जनता में हिंदी का प्रचार तो हो गया था पर साहित्य की रूपरेखा निर्धारित करने की कोई योजना नहीं थी।

हिंदी भाषा और साहित्य को विभिन्न धाराओं का नेतृत्व करने के लिए जिन गुणों की आवश्यकता होती है, महावीर प्रसाद द्विवेदी में उन सब का सामंजस्य था। वह अपने समय की विभूति थे, वह अध्ययनशील थे। हिंदी के प्रति उनका प्रेम स्वाभाविक था, अपने समय के कुशल साहित्यिक नेता थे उन्होंने अपने समय के सभी लेखकों संपादकों एवं साहित्यकारों को अपने व्यक्तित्व से प्रभावित किया। इसमें संदेह नहीं कि उन्होंने अपनी अतुल सेवाओं से साहित्य को यह उचित स्वरूप दिया, जो उसे स्थायित्व प्रदान करने में समर्थ हो सका।

भाषा की दृष्टि से महावीर प्रसाद जी द्विवेदी बेजोड कलाकार थे। वह न तो प्रचलित संस्कृत शब्दों के विरोधी थे और ने फारसी के, वह गृह के स्थान पर घर और उच्च स्थान पर ऊँचा लिखना अधिक पसंद करते थे। वस्तुत: वह भाषा के आचार्य थे, उनका शब्द चयन बडा शक्तिशाली और सुव्यवस्थित होता था। वह उर्दू शब्दों के विरोधी नहीं थे। दाद, कुर्बान, तमीज आदि शब्दों को बेखटके अपना लेते थे। वह प्रत्येक शब्द शुद्ध रूप से लिखते थे और

उनका उसी अर्थ में प्रयोग करते थे, जो अर्थ अपेक्षित होता था। उनकी भाषा व्याकरण के नियमों में बंधी हुई होती थी। महावीर प्रसाद जी की शैली में भाषा संयत प्रभावपूर्ण बोधगम्य, तर्क सम्मत गंभीर बडे और छोटे वाक्य विराम, अर्धविराम, भाषा व्यंजना से और भी अधिक स्पष्ट और सरल बना देते थे।

हिंदी साहित्य में महावीर प्रसाद द्विवेदी का मूल्यांकन–

महावीर प्रसाद जी द्विवेदी जी के सदृश्य साहित्य महारथियों का साहित्य में स्थान निर्धारित करना कठिन ही नहीं धृष्टता सा प्रतीत होता है, क्योंकि उनके क्षेत्र और सेवाओं को इस प्रकार सीमित करना उचित नहीं जंचता। पथ प्रदर्शक की दृष्टि से वह भाषा के कुशल अध्यापक, ठोस आलोचक और आदर्श निरंकुश शासक थे। महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने भावी लेखकों और कवियों को जन्म देने और उनकी कला एवं प्रतिभा को चमकाने में अत्यधिक परिश्रम किया। उन्होंने अपनी आलोचना द्वारा बिखरी हुई साहित्यिक प्रवृत्तियों को एक सूत्र में पिरोया, भाषा को व्याकरण की रूखानी से खराद कर चमकाया चमत्कृत किया। साहित्य में नए विषयों और नई शैलियों का प्रादुर्भाव किया। वह न तो प्राचीनता के अंध भक्त थे, और न नवीनता के पुजारी। वस्तुत: महावीर प्रसाद जी द्विवेदी कुशल संपादक, आलोचक, निबंधकार, कवि और शैली के निर्माता थे। उनकी वर्णनात्मक, भावनात्मक, आलोचनात्मक, व्यंगात्मक आदि शैलियों ने हिंदी गद्य साहित्य क्षेत्र में नई नई दिशाओं की ओर संकेत ही नहीं वरन प्रेरणा भी प्रदान की है। वास्तव में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी 'एक में अनेक और अनेक में एक थे'।

अंग्रेजी साहित्य में १८ वीं शताब्दी में जो कार्य जानसन ने किया था उतना ही महत्त्वपूर्ण कार्य हिंदी में द्विवेदी जी ने किया। उनकी कार्य शैली संतुलित, उनका अध्ययन गंभीर, उनकी योग्यता बेजोड और

माँ

बचपन से अपने जीवन का
हर सुख हर दुख जो भी बीता
अपने दिल की सारी बातें
बाँटी मैंने माँ के साथ

माँ वह उसने ऐसा बोला
माँ ये मुझको लाकर देना
याद है मेरा तुमसे कहना
माँ तुम मेरे पास ही रहना

कभी–कभी छोटी बातों से
लडते थे हम यारों जैसे
लेकिन तुमने ही आकर फिर से
मना लिया मुझे बडे प्यार से

अब जब बिस्तर पर लेटी तुम
बात नहीं मुझसे करती तुम
क्यों मुझको तडपाती हो माँ
चलो अभी उठ जाओ न तुम

सब कुछ तुमसे कहती थी मैं
अब तक तुम संग रहती थी मैं
तुम जो मुझको छोड जाओ तो
वह दुख किससे बोलूँगी मैं

जल्दी आँखें खोलो न माँ
मुझको गले लगा लो न माँ
यह जग तुम बिन सुना है माँ
चलो अभी उठ जाओ न माँ

– **हिमाली संजीवनी कोनार,** श्रीलंका

जीवन के अग्निपथ पर

जीवन के इस अग्निपथ पर हमें,
रोज ही चलना है।
चलते-चलते, जलते-जलते भी हमें,
जीवन गढना है।
आएँगी बाधाएँ और विपदाएँ भी,
पीछे ना मुडना है।
तम की राहों में भी हमको दीपक
बनकर जलना है।
कंटक राहों पर चल के लक्ष्य को,
साधे रखना है।
राह कंटीली हों फिर भी हमको,
आगे बढना है।
पाँव जलें तो जलने दो हमको,
तप्त पथ पर चलना है।
जीवन के इस अग्नि पथ पर हमें,
अकेले चलना है।

– अलका अग्रवाल
बी-१, बिल्डिंग नं. ४,
सिटी प्राईड रेजीडेंसी, सालुंके विहार रोड,
एस.वी.सी. बैंक के पीछे, वानवडी, पुणे ४०

उनकी प्रतिभा बहुमुखी थी।

उल्लेखनीय आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी का जन्म १५ मई अठ्ठारह सौ चौसठ को दौलतपुर गाँव रायबरेली उत्तर प्रदेश में हुआ। मृत्यु २१ दिसम्बर १९३८ को रायबरेली में हुई। इनके पिता का नाम रायबहादुर था। यह साधारण परिवार में हुए, पढाई का प्रबंध भी समुचित नहीं न हो सका। आर्थिक संकटों के कारण यह अधिक शिक्षा प्राप्त न कर सके। १८ वर्ष की आयु में इन्होंने अजमेर में १५ मासिक वेतन पर रेल्वे में नौकरी कर ली। मुम्बई में रहकर द्विवेदी जी ने तार का काम सीखा तथा उन्नति करते हुए क्लर्क हो गए। उन्होंने अंग्रेजी, मराठी, गुजराती और उर्दू भाषाओं का अच्छा ज्ञान प्राप्त किया। संस्कृत के साथ-साथ अन्य भाषाओं का ज्ञान होने पर उनका ध्यान मातृभाषा की ओर गया। ऐसी भावना से प्रेरित होकर उन्होंने रेल्वे की नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। रेलवे की सरकारी नौकरी छोडने के बाद द्विवेदी जी सन १९०३ में सरस्वती का संपादन भार ग्रहण किया। आपने बीस वर्ष तक सरस्वती पत्रिका का संपादन किया। सन १८८१ में उन्होंने सरस्वती से अवकाश ग्रहण किया, पर सन १९२२ तक वह बराबर उसके लिए लेख लिखते रहे। उन्होंने अपने संपादन काल में कई नए लेखकों तथा कवियों को जन्म दिया और अपने परिश्रम त्याग तथा विचारों से एक ऐसे युग का निर्माण किया जो हिंदी साहित्य में द्विवेदी युग के नाम से प्रसिद्ध है। इस पर हिन्दी प्रेमियों ने हृदय खोलकर उनका सम्मान किया। सन १९३१ में नागरी प्रचारिणी सभा उन्हें हिंदी का सर्वप्रथम आचार्य मानकर सम्मानित किया।

गाँव की दशा सुधारने में भी उनका महत्त्वपूर्ण सहयोग रहा उनके प्रयास से ग्रामपंचायत का कानून पास हुआ। उल्लेखनीय आप अपने गाँव के सर्वप्रथम सरपंच हुए। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी में स्वाभिमान और निर्भीडता की भावना बडी प्रबल थी। २१ दिसम्बर १९३८ को महावीर प्रसाद द्विवेदी जी का स्वर्गवास हो गया।

हिंदी के गद्य में द्विवेदी जी की साहित्यिक सेवाओं पर द्विवेदी युग ही प्रसिद्ध हो गया है। वह इस प्रकार से एक युग प्रवर्तक लेखक सिद्ध हुए। हिंदी और संस्कृत के साथ-साथ भारत की भिन्न भिन्न भाषाओं का इन्हें ज्ञान था। ब्रज भाषा तथा अवधि के वह पण्डित थे। भारतेंदु जी ने जो कार्य आरम्भ किया था और अधूरा रह गया था, उसे द्विवेदी जी ने पूर्ण कर दिया।

संपर्क : लाखेरी ३२३६१५
जिला बूँदी (राजस्थान)

सन्नाटे में रोशनी है।

हरि नारायण व्यास को समर्पित 'सन्नाटे में रोशनी' है– कवितासंग्रह डॉ. खडसेजी का आंतरिक सुंदरता का हृदयस्पर्शी चित्रण है।

व्यास की जानकारी संक्षेप में –

डॉ. दामोदर खडसे की कविताओं में एक आंतरिक आत्मीय सुंदरता का हृदयस्पर्शी चित्रण हुआ है।

प्रकृति के उपादानों में भी अपने उलझन भरे जीवन की विवशता का प्रतीक बनने की क्षमता है।

डॉ. खडसे को नदी बहुत प्रिय है। इस संग्रह में अनेक स्थानों पर नदी बहती हुई मिलती है। यह नदी अनजान जगहों पर, बीहड में मैदानों को सींचती सुबह–शाम हर मौसम में अनवरत बहती रहती है, किनारों की बाहुओं से घिरी हुई अपने आपमें खोई हुई। यह नदी कविता नारी का प्रतीक बन जाती है।

नदी का प्रवाह ही समय है। वैसे गतिशीलता ही समय के अस्तित्व का आभास दिलाती है और यह गतिशीलता कण–कण से लेकर ग्रह–नक्षत्र तक में छिपी हुई है। इन सबको जोडती है यही गति। यह गति ही उत्पन्न करती है समय। यदि गति अचानक रूक जाए तो सब कुछ समयहीन होकर बिखर जाएगा।

समय का अमृत तिलक करती है। नदी की हर बूँद/समय का जन्म है।'

भारतीय कविता की प्रतिबद्धता व्यक्ति से ही जुडी हुई है। यह मान लेना कि आज के युग में मनुष्य केन्द्र में है किंतु आज जो मनुष्य केन्द्र में है वह सर्वहारा है। उसका सब कुछ छीना जा चुका है। यह नष्ट होने के लिए विवश है। अस्तु।

डॉ.खडसे की इन कविताओं में मन रम जाता है। आशा की बांसुरी का सीमा स्वर मन की किसी अज्ञात अनुभूति को इंगित करता है। एक मानसिक तृप्ति प्रदान करता है। मैं इस अनुभूति को ही कविता की सार्थक सफलता मानता हूँ। यही है डॉ. दामोदर खडसे का कवि।

एक नदी भीतर बहती है, जीवन के समानांतर, साथ–साथ... कई बार लगता है–जीवन नदी है और कभी कभी लगता है, नदी जीवन है। जीवन और नदी का यह रिश्ता सुख–दुख के किनारों को बहा ले जाता है, अपने साथ। हालाँकि नदी अपने किनारों में केवल सुख, आनंद, उत्कर्ष और ऊर्जा बोती है। फिर भी, कभी–कभी उसके दोनों किनारे बाढ की चपेट में आ जाते हैं। किनारों की यह अंतर्यात्रा व्यक्ति के भीतर तमाम संवेदनाओं का ताना–बाना बुनती है। ऐसे में प्रकृति और मनुष्य के रिश्ते आपस में कुछ इस तरह जुड जाते हैं कि उपमा, उपमेय और उपमान विसर्जित हो जाते हैं और यह एकाकार ही कविता को जन्म लेता है। समय अक्षरबद्ध हो जाता है।

कहा जाता है कि चित्र, मौन कविता का नाम है और कविता, सुखर चित्र होती है, शब्दों का उपहार पाकर...! चित्र की स्थिरता कविता के साथ प्रवहमान होती है। केवल प्रतिभा से कोई कलाकार नहीं बन जाता, उसके पीछे किसी ऊर्जामय प्रेरणा की भूमिका होती है, चाहे वह प्रकृति की व्यापक, अंतहीन, सार्वभौमिक चित्रकारी हो या मनुष्य की असीम उदारता, प्रेम, समर्पण, आत्मीयता का उदात्त स्पर्श हो... शब्द और रंग एक आकृति, एक चेहरा पा जाते हैं। यही संवेदना जब कवि और पाठक के बीच संवाद

करती है, तब एक अलौकिक समय का जन्म होता है, वह कविता ही होती है।

जीवन नया भी है और संस्कारों से सनातन भी। नदी अपनी सनातन-धारा जीवन में प्रवाहित करती है, पर वह अपने आप को कभी दोहराती नहीं... न अपनी गति, न लहरें और न कलकल की ध्वनि... कुछ भी तो नहीं दोहराती नदी.... हर पल नयापन...। संस्कारों की गठरी प्रतिमानों में समेट कर सतत् नवीनतम और मनोहारी नदी की तरह हमारा जीवन क्यों न हो...।

जीवन की चुनौतियाँ, संघर्ष, उतार-चढाव और जय-पराजय की बाढ किनारों की सीमाएँ ध्वस्त कर देती हैं। नदी बेचैन हो उठती है, जीवन भंवर बन जाता है, फिर भी आशाएँ बनी रहती हैं, तिनके सहारे बन जाते हैं... फिर बाढ और बरसात के बाद निखरे-निखरे से शब्द अपने स्वरों में एक विशिष्ट महक पा जाते हैं, संबोधन जीवन पा जाता है। कविता ऐसे संबोधनों की जीती है।

कविता एक ऐसी यात्रा है, जो भीतर और बाहर निरंतर प्रवहमान होती रहती है। जिन क्षणों को मनुष्य एकांत में जीता है या जीवन जीते हुए एकांत का अनुभव करता है, वे क्षण कविता के क्षण होते हैं, एक अंतर्यात्रा के क्षण होते हैं। अपने-अपने एकांत में मनुष्य इन संवेदनाओं के साथ होता है। ऐसी निजता में एक विशिष्ट तरह की सामाजिकता भी होती है। कई बार कविता, निजता और सामाजिकता को इस तरह अपना लेती है कि दो रंगों के मिलने की रेखा का पता लगाना असम्भव हो जाता है। नदी और जीवन का घुल-मिल जाना संभवत: ऐसी रेखाओं का विसर्जन है।

('सन्नाटे में रोशनी'- ले. दामोदर खडसे की पुस्तक से)

विशुद्ध राष्ट्रभाषा परिचय - वचन

वचन के नियमोंको अच्छी तरह समझ लें और यह ध्यान रखें कि कर्तरी प्रयोगमें कर्ताके लिंग, वचन के अनुसार और कर्मणी प्रयोगमें तथा भूतकालमें सकर्मक क्रिया हो तो कर्मके लिंग, वचनके अनुसार क्रिया रहती है। देखिये-

गलत प्रयोग	सही रूप
हिंदुस्तानमें बहुत भाषा है।	बहुत भाषाअें
स्त्रियायें लडाअीमें काम क्यों करती हैं?	स्त्रियाँ
अुन्हें सौ रूपियाँ वेतन मिलता है।	सौ रूपये
कार्यकर्ते, कार्यकर्ताओं हैं।	कार्यकर्ता हैं।
नेताअें; नेताओं होंगे।	नेता होंगे।
जे विद्यार्थी अध्ययन नहीं करते,	जो विद्यार्थी
मैं अुनके साथ स्कूल आये थे।	मैं आया था।
फिर नेपोलियनने अेक अेक बिल्लियाँ छोडी।	अेक अेक बिल्ली छोडी।
वह दृश्य नयनको प्यारा लगता है।	नयनोंको
मैं अपने मित्रयोके घर गया था।	मित्रोंके घर
कअी प्रांतमें हिंदी बोली जाती है।	कअी प्रांतोंमें
हर बडे गाँवोंमें सिनेमागृह होता है।	हर बडे गाँवमें

अंडमान का हिन्दी बाल साहित्य

– डॉ. व्यास मणि त्रिपाठी

मनोरंजन के साथ बालकों का व्यक्तित्व विकास बाल साहित्य का उद्देश्य है। अंडमान तथा निकोबार द्वीप समूह में ही नहीं बल्कि किसी भी प्रदेश, देश अथवा संसार के किसी कोने में सृजित बाल साहित्य दो रूपों में प्राप्त होता है।– एक वह जिसकी सृष्टि उसने स्वयं की और दूसरा वह जो दूसरों द्वारा उसके लिए सृजित हुआ। द्वीप समूह में रचित हिंदी की बाल रचना कौनसी है? उसका रचनाकार कौन है? उसका प्रकाशन वर्ष क्या है? आदि प्रश्न किसी भी साहित्यान्वेषी की जिज्ञासा के विषय हो सकते हैं। मैंने जब यहाँ के बाल साहित्य को टटोलना शुरू किया तब मुझे भी इन प्रश्नों का साक्षात्कार करना पडा था। मेरी जिज्ञासा का शमन करने के लिए कोई इतिहास ग्रंथ तो नहीं उपलब्ध हुआ किंतु सन् १९७६–१९७७ में प्रकाशित 'देश गीतांजलि' मुझे मिली। इसमें अन्य गीतकारों के साथ–साथ द्वीपों के कुछ गीतकारों के गीत भी संकलित हैं। इस संकलन का उद्देश्य विद्यार्थियों में देशभक्ति के साथ–साथ चरित्र निर्माण की शिक्षा देना रहा है। यहाँ के विद्यालयों में विभिन्न अवसरों पर ये गीत गाए जाते रहे हैं।

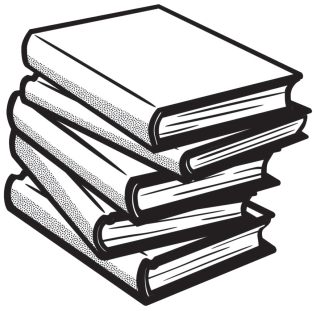

इस संकलन के गीत जहाँ बालक को राष्ट्र–धर्म, नैतिकता, सदाचार, त्याग और बलिदान का पाठ पढाते हैं वहीं द्वीप समूह की सुंदरता, सागर–पहाड, वन–प्रांतर की मनोरम झांकी के साथ–साथ 'कालापानी' की भयंकरता के बावजूद स्वतंत्रता सेनानियों के अदम्य साहस, उत्साह और स्वाभिमान से परिचित कराते हैं। विनोद तिवारी का प्रसिद्ध गीत 'ऐसा मुझे लगता हैं, तारे आसमान के धरती पे आये बने द्वीप अंडमान के।' अंडमान–निकोबार की नैसर्गिक सुषमा की झांकी है। यह अपने सृजन काल से लेकर आज तक विद्यालयों में उमंग के साथ गाया जाता है। बच्चे सहज ढंग से इसे गाते और अपने परिवेश से परिचित होते हैं। राजनारायण बिसारिया का गीत 'काले–काले बादल नीला है जलधि जल/खडे–खडे नाचते हैं नारियल के जंगल।' अपनी गत्वरता में जो बिंब प्रस्तुत करता है वह बच्चों के लिए न केवल सहज ग्राह्य है बल्कि खेल–खेल में द्वीप समूह की विशेषताओं को जानने–समझने में भी मददगार है।

बालक के चारों ओर फैला संसार ही बाल साहित्य का विषय है। इसकी परिधि में पेड–पौधे, फूल, तितली, वर्षा, बादल, सूरज, चाँद, तारे, आसमान, हाथी, शेर, चूहा, बिल्ली आदि के साथ सरदी, गर्मी पाला–पत्थर सब शामिल हैं। यानी एक पक्षी से लेकर अनंत आकाश और घास–फूस से लेकर नारियल–सुपारी के वृक्ष तक का संसार बाल साहित्य का विषय है किंतु उसकी एक बडी शर्त यह है कि वह बोधगम्य हो और वह बालक को प्रेरित –प्रोत्साहित करे। खेल–खेल में हँसते–गाते हुए बच्चों को शिक्षित करना आज की शिक्षा–नीति की प्रधान विशेषता है। बाल साहित्य का कर्तव्य भी इसी प्रकार का होना चाहिए। बालक ज्यों–ज्यों बडा होता जाता है वह अपने परिवेश को समझना

सुविचार

दूसरों की गलती सहन करना एक बात है, परन्तु उन्हें माफ कर देना और भी महान बात है।

चाहता है, उसे पकडना चाहता है। उसमें आत्मीयता की गंध भरने की ललक जागती है, अपना –पराया का भाव जागता है।एक सच्चा इन्सान बनने की भूमि तैयार होती है। इस भूमि में जैसा बीजारोपण होगा वैसा ही बालक का चरित्र निर्मित होगा। बालक को परिवेश का बोध करानेवाली कविताएँ यहाँ कुछ अधिक ही लिखी गई हैं। ओमप्रकाश वर्मा द्वारा रचित 'कितने–प्यारे–प्यारे द्वीप' अंडमान–निकोबार द्वीप समूह की झाँकी प्रस्तुत करनेवाला गीत है– 'कितने प्यारे–प्यारे द्वीप, सब द्वीपों से न्यारे द्वीप

आसमान के तारे द्वीप, सीमा के रखवाले द्वीप

इसकी भोर सुहानी कितनी और सलोनी कितनी शाम पल–पल इनका रूप बदलता, क्षण–क्षण होता वेश ललाम कभी धूप के कभी छांव के, तनते रहते यहा वितान मानसरोवर के हंसों से, सागर मध्य विचरते द्वीप

कितने प्यारे–प्यारे द्वीप।'

(कृति, पृष्ठ संख्या ७४)

यह है– द्वीपों का प्राकृतिक सौंदर्य। शब्द–चयन माधुर्य उपस्थित करने के साथ ही साथ बोझिलता से मुक्त गतिशील बिंब का सृजन करता है। पल–पल बदलती प्रकृति का साकार रूप प्रस्तुत होने में इससे काफी मदद मिलती है। इसी गीत का अगला चरण द्वीप समूह में पैदा होनेवाली फसलों तथा खाद्य पदार्थों की सूचना देता है–

'यहाँ नारियल और सुपारी, नैसर्गिक परिवेश में

खडे हुए हैं वीर सिपाही, मानो सैनिक वेश में

केला, काजू और पपीता, आंगन–आंगन गाते गान

पवन पालना झूल रहे हैं, खेतों में हरियाले धान

नंदन वन से होड लगाते, सुंदर, श्यामल कारे द्वीप।

कितने प्यारे–प्यारे द्वीप।।'

कभी 'कालापानी' के नाम से कुख्यात अंडमान–निकोबार अब 'मुक्ति तीर्थ' के रूप में समादूत है। स्वतंत्रता सेनानियों के चरण रज से पावन यह धरती 'पुण्य भूमि' है। यह शहीदों के त्याग और बलिदानों की महागाथा की भूमि है। अंग्रेजों की दुर्दमनीयता के विरुद्ध 'वंदेमातरम्' का जयघोष करनेवाले स्वाधीनता संग्राम के महानायकों के अदम्य साहस और निर्भयता की भूमि है। मानव के कोल्हू में जोते जाने की नृशंसता तथा करूणा गाथा की भूमि है। अमानवीयता, क्रूरता और प्राण लेवा प्रहारों के बावजूद न झुकने और न टूटने की प्राणवत्ता और संकल्पों की भूमि है। यही कारण है कि यहाँ की रचनाधर्मिता में ये सभी पक्ष प्रबलता के साथ उभरते रहे हैं। यहाँ की बाल कविताओं में भी इन पक्षों की मौजूदगी देखी जा सकती है। 'मुक्ति धाम', 'मुक्ति तीर्थ', 'शहीदी भूमि' के रूप में अंडमान का स्मरण कई कवियों ने किया है। व्यास मणि त्रिपाठी ने 'कालापानी मत कहो इसे' शीर्षक कविता में लिखा है–

'माता, मातृभूमि पर जो प्राणों को अर्पित करता है, वह देव तुल्य इतिहास पुरूष मरकर भी कभी न मरता है। ऐसे शहीद की चरणधूलि चंदन रोली बन जाती है,

गौरव–गाथा की पुण्य भूमि सदियों तक पूजी जाती है।'

– (कालापानी, संज्ञा मुझको खलती है, पृष्ठ १०)

विषय के आधार पर बाल कविता का वर्गीकरण निरंकार देव सेवक ने इस प्रकार किया है– बच्चों के प्रतिदिन के संबंध में आनेवाली वस्तुओं से संबंधित

विषयों पर, बच्चों के परिचय संबंध में आनेवाले जीव-जंतु, पशु पक्षियों से संबंधित विषयों पर, पेड-पौधों और फल-फूलों पर, आकाश, तारे, चांद, सूर्य, हवा, पृथ्वी, जल, नदी, सागर, मैदान, पहाड से संबंधित विषयों पर खेल, खिलौनों, खेलों से संबंधित, ऋतुओं और प्राकृतिक प्रमुख दृश्यों से संबंधित, अभिनय या प्रयाण गीत, सामूहिक गीत या सहगान, राष्ट्रीय बालगीत।

डॉ. राजकिरन दीक्षित ने अपने शोध-प्रबंध 'आधुनिक युग के प्रमुख हिंदी बालगीतकार' में बाल गीतों का जो वर्गीकरण प्रस्तुत किया है उसमें निरंकार देव के उपर्युक्त वर्गीकरण के अतिरिक्त तीन विषय और हैं- त्योहारों के गीत, विज्ञान के गीत, शिक्षाप्रद गीत (संदर्भ -बाल वाटिका अक्टूबर २०१०, पृष्ठ संख्या ३०)।

अंडमान की बाल कविता में उपर्युक्त सभी विषयों का समावेश भले न हुआ हो लेकिन अधिकांश का प्रतिनिधित्व देखा जा सकता है।

जीव-जंतु, पशु-पक्षियों के प्रति बच्चों के मन में कौतूहल, जिज्ञासा और आकर्षण का भाव रहता है। शेर, हाथी, कुत्ता, बिल्ली, चूहा, खरगोश आदि से संबंधित कविताएँ बच्चों को अधिक आनंदित करती है। इसीलिए इन पर काफी साहित्य मिलता है। द्वीपों के कवि जगदीश नारायण राय 'चूहे' कविता में चूहों के रंग, रूप, आकार से लेकर क्रिया-कलापों का मनोहारी वर्णन करते हैं-

'सागर तट चूहे बहुत अलग-अलग हैं रंग
कोई लाल सफेद तो कोई श्यामल रंग
कोई श्यामल रंग काम बस गडबड झाला
हाथ साफ कर रहे बना मकडी का जाला
कहते कवि जगदीश न होता रूप उजागर
देख रहा दिन-रात काम इनका यह सागर।'
- (द्वीपायन, पृष्ठ संख्या २८)

अंडमान-निकोबार सागर की गोद में स्थित है। यहाँ के लोगों का सागर से गहरा नाता है। सागर-तट पर विचरण करते, मौज-मस्ती करते बच्चों को सागर दुलारता है तो डराता भी है। वह मुक्ता-माणिक्य लुटाता है तो लूटता भी है। उसके कई रूप हैं। कभी वह सुरमई नजर आता है तो कभी सिंदूरी, कभी रूपहला और नीला तो है ही। व्यास मणि त्रिपाठी ने कविता 'सुना आपने' में बच्चों को एकता का संदेश देने के लिए लहरों को आधार बनाया है-

'उछल कूदतों, नर्तन करतीं, नित सागर में साँसे भरतीं रुन-झून करतीं, नित्य थिरकतीं,
मचल-मचल कर तृषा बुझातीं
हिल-हिल मिल संगीत सुनातीं
किंतु कभी क्या सुना किसी ने
किंतु कभी क्या सुना आपने
दुबली-पतली, मोटी-तगडी आपस में बंटती हैं लहरें
ईर्ष्या से जलती हैं लहरें।'

(कालापानी संज्ञा मुझको खलती है - कविता-संग्रह पृष्ठ संख्या ८९)

बाल साहित्यकार प्रकृति की विभिन्न मुद्राओं का सर्वाधिक वर्णन करते हैं। उनका उद्देश्य यही रहता है कि बच्चे प्रकृति से सीखें। बादल और सागर पर अनेक कवियों ने कविताएँ लिखी हैं। सागर वर्षा

ज्ञानांश

जो कुछ भी आपके पास है उसे बढा-चढाकर मत बताओ और न ही दूसरों से ईर्ष्या करो, जो दूसरों से ईर्ष्या करता है उसे मन की शांति नहीं मिलती। हजारों खोखले शब्दों से अच्छा वह एक शब्द है जो शांति लाये। तीन चीजें ज्यादा देर तक नहीं छुप सकती- सूर्य-चन्द्रमा और सत्य।

- भगवान गौतम बुद्ध

का कारण भी है। विजय कुमार शर्मा वर्षा का चित्र खींचते हुए सागर की इस भूमिका का स्मरण कराते हैं–

'सागर से गागर भर अपनी श्यामल मेघ चले
गगन डगर पर इठलाते–बलखाते मेघ चले
हंसी ठिठोली करते मेघा जब तक जल छलकायें
जल की बूंदें धरती पर गिर सोंधी महक जगायें
जीवन–रस बरसाते आस जगाते मेघ चले।
सागर से गागर भर अपनी श्यामल मेघ चले।'

(द्वीप लहरी, संपादक : डॉ. व्यास मणि त्रिपाठी, अंक–२९, पृष्ठ संख्या ३९)

बाल साहित्य अपने परिवेश से अछूता नहीं रहता। देश–काल की गूंज शिष्ट साहित्य की तरह उसमें भले न सुनाई दे लेकिन बच्चों के आस–पास का जीवन अवश्य झंकृत होता रहता है। अंडमान के बच्चे नारियल, सुपारी, पडाक, गर्जन, सफेद चुगलुम आदि से परिचित हैं इसलिए कविताओं में इनका वर्णन मिलता है लेकिन वे महुआ, शीशम आदि से परिचित नहीं हैं अत: कविता में इनका वर्णन अस्वाभाविकता की सृष्टि करेगा। शरद ऋतु संबंधी फल–फूलों, फसलों, जीव–जंतुओं का यहाँ के साहित्य में वर्णन भी स्वाभाविक और बच्चों के लिए बोधगम्य नहीं होगा क्योंकि शरद ऋतु का कोई खास असर यहाँ दिखाई नहीं देता। इसीलिए वर्षा और ग्रीष्मकालीन वृक्ष तथा फूल–फल यहाँ के साहित्य की शोभा बढाते हैं। ईश्वरीप्रसाद गौड, आनंदवल्लभ शर्मा 'सरोज', ओमप्रकाश वर्मा, डी.एम. सावित्री आदि की कविताओं में यहाँ के इसी परिवेश का चित्रण मिलता है। जगदीश नारायण राय लिखते हैं–

'सागर तीरे गांव हमारा, सघन नारियल छांव है
नीलम जैसे प्यारे लगते अंडमान के गांव हैं
अजगर जैसी पगडंडी है, लहरदार हरियाली है
झूम रही मस्ती में अपनी, सीधी खडी सुपारी है।।'

तीन से अठारह वर्ष की अवस्था के लिए लिखा गया साहित्य बाल साहित्य का बोध कराता है। जाहिर है इस अवस्था में शिशु, बालक और किशोर आते हैं। इनसे संबंधित साहित्य अलग–अलग रूप, आकार, उद्देश्य का होकर भी बाल साहित्य के अंतर्गत ही आयेगा। शिशु के लिए लिखी गई रचनाओं के प्रेरणा, प्रोत्साहन और संदेश के लिए उतनी गुंजाइश नहीं होगी जितनी किशोर अवस्था के लिए लिखी गई रचनाओं में होगी। बच्चों में साहस, धैर्य, संकल्प, निर्भयता, परिश्रम आदि का भाव जगाना बाल साहित्य का लक्ष्य होना चाहिए। यदि किशोरों को उनकी भीतरी शक्ति से परिचित नहीं कराया जाएगा तो वे एक सक्षम मनुष्य कैसे बन पाएँगे? सहज और सरल शब्दों में शिशु तथा बालक को आगे बढने के लिए प्रेरित–प्रोत्साहित करना चाहिए। इस संदर्भ में डॉ. व्यास मणि त्रिपाठी की 'नन्हें हाथ' शीर्षक एक प्रेरक कविता है–

'नन्हें हाथों से डरकर, नभ खुद ही झुक जायेगा
जीवन के मरूथल में भी, फूल सदा मुस्कायेगा
नन्हें हाथों के बल से, शिला चूर हो जायेगी
धीर वीर पतवार देख, सरिता राह बतायेगी
हो उमंग कुछ करने की, उम्र न आडे आयेगी
संकल्प, शक्ति, निष्ठा ही ध्रुव प्रह्लाद बनायेगी।'

अंडमान के हिंदी कवियों ने देश–भक्ति संबंधी बाल गीतों की रचना भी की है। सन् १९७६–१९७७ में प्रकाशित 'देश गीतांजलि' में शारदा राम, ओमप्रकाश मल्होत्रा, सुरेश नंदन प्रसाद सिंह की रचनाएँ संकलित हैं। आनंद वल्लभ शर्मा 'सरोज' द्वीपों के जाने–माने गीतकार रहे हैं। उमेश प्रसाद, जंग बहादुर सिंह 'भ्रमर', श्री निवास शर्मा के नाम भी इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। देश की विशेषताओं को रेखांकित करते हुए डॉ. व्यास मणि त्रिपाठी ने जो गीत लिखा है उसकी कुछ पंक्तियां यहां द्रष्टव्य हैं–

'सबसे प्यारा मेरा देश, सबसे न्यारा मेरा देश
मुकुट हिमालय पहन खडा है, सागर धोता पांव
गंगा-यमुना के कल-कल से, शीतल, हरियल गांव
राम, कृष्ण, गौतम, गांधी की, कर्मभूमि यह देश
शांति, स्नेह, सद्भाव, अहिंसा, कण-कण का संदेश
आचरण अनुपम और विशेष। सबसे प्यारा मेरा देश।'

बाल कविता के अंतर्गत लोरियां एवं प्रभातियां भी आती हैं। ये शिशु को सुलाने और जगाने से संबंधित हैं। माँ, दादी, नानी और कभी-कभी पिता द्वारा इनका गायन किया जाता है। सृष्टि को उत्पत्ति के समय से ही माँ द्वारा लोरी सुनाने की शुरुआत हुई होगी। लोरी की रचना के लिए किसी खास पढाई-लिखाई की आवश्यकता नहीं होती। शिशु को सुलाते समय माँ के मुंह से प्रवाहित सहज उद्गार ही लोरी का रूप ले लेते हैं। लोरी और प्रभाती बच्चों को संस्कारित करने में काफी भूमिका निभाती हैं। अंडमान में भी लोरियां और प्रभातियां गाई-सुनाई जाती हैं लेकिन उनका लिखित रूप कम ही मिलता है। अमरजीत कौर सेतिया की लोरी की कुछ पंक्तियां

'सो जा सांझ/पकाया धुआं-धुंधला
तेरी अम्मा पकायी मीठी खीर/ जिये रे तेरा वीर
सो जा री मेरी लाडली/ मैं तो सुबह गई थी/ कर्मकार में
फिर भी भूली नहीं मैं तेरे प्यार में
तेरी याद में बीता दिन सारा
फिर भी न मन हारा/ सो जा री मेरी लाडली
तेरी झोली में भर दूं खुशियां आज री।'

(अंडमान की हिंदी कविता, संपादक, डॉ. व्यास मणि त्रिपाठी, पृष्ठ ३३)

वैसे तो लोरी के आश्रय और आलंबन माँ और शिशु होते हैं किंतु जब कवि की कल्पकना उफान मारती है तब वह प्रकृति को भी आश्रय-आलंबन बना देती है। कृष्ण कुमार 'विश्वेंद्र' की 'लोरी' शीर्षक कविता में सुनाने और सुनने का कार्य नारियल वृक्ष और लहरों के बीच होता है-

'नारियल का वृक्ष/समुद्र किनारे
गुदगुदी रेत के लिहाफ में धंसा/ गुनगुना रहा/
पंखों का चंवर डुलाता/ लोरी गाता
सागर लहरों को सुला रहा।'

(अंडमान की हिंदी कविता, संपादक, डॉ. व्यास मणि त्रिपाठी, पृष्ठ संख्या ५६)

पत्राचार

अभिमत

आपको प्रेषित समिति संवाद' अप्रैल-मई २०२२ की पत्रिका दि. २०/५/२०२२ को प्राप्त है, धन्यवाद। पूरी सामग्री पठनीय, प्रशंसनीय व स्पृहणीय है। अप्रैल महीने में ही देश सेवा के लिए बलिदान हुए उनका स्मरण 'बदला लिया मैंने: अनंत कान्हेरे' लेख महत्त्वपूर्ण है। लेख पढकर मन रोमांचित होता है कि इतनी घटना कैसे घटी होगी। उन बलिदानी नवयुवकों को कोटि-कोटि नमन। आध्यात्मिक लेख- रामायण और रामचरितमानस : विश्व के पाचों भूखंडों में लेख सराहनीय है। यूरोप, बेल्जियम, जर्मनी, पोलैंड, इतालवी इत्यादि स्थानों पर रामायण की महत्ता हमारे देश को गर्वित करती है। भारत के कुछ व्रत और त्यौहार देखा जाए तो भारत में अनगिनत व्रत और त्यौहार है। कुल मिलाकर पत्रिका को साधुवाद।

भवदीया,
व्ही. एस. शांताबाई

प्रधान सचिवा
कर्नाटक महिला हिन्दी सेवा समिति
१७८. चौथा मुख्य रस्ता, छठवाँ क्रॉस,
चामराजपेट, बेंगलूर-५६००१८

अनमोल वचन

मैं करूणा और न्याय के विषय गाऊंगा; हे परमेश्वर, मैं तेरा ही भजन गाऊंगा। मैं बुद्धिमानी से खरे मार्ग में चलूंगा। तू मेरे पास कब आएगा! मैं अपने घर में मन की खराई के साथ अपनी चाल चलूंगा; मैं किसी ओछे काम पर चित्त न लगाऊंगा। मैं कुमार्ग पर चलनेवालों के काम से घिन रखता हूँ; ऐसे काम में मैं न लगूंगा। टेढा स्वभाव मुझ से दूर रहेगा; मैं बुराई को जानूंगा भी नहीं। जो छिप कर अपने पडोसी की चुगली खाए, उसको मैं सत्यानाश करूंगा; जिसकी आँखे चढी हों और जिसका मन घमण्डी है, उसकी मैं न सहूंगा। मेरी आंखे देश के विश्वास योग्य लोगों पर लगी रहेंगी कि वे मेरे संग रहें; जो खरे मार्ग पर चलता है वही मेरा टहलुगा होगा। जो छल करता है वह मेरे घर के भीतर न रहने पाएगा;जो झूठ बोलता है वह मेरे सामने बना न रहेगा।

– भजन संहिता

जैसा कि आरंभ में उल्लेख किया गया है बच्चे को बाल साहित्य दो रूपों मे प्राप्त होता है– एक तो वह जिसकी सृष्टि उसने स्वयं की और वह, जो दूसरों द्वारा उसके लिए सृजित हुआ। अभी तक दूसरों द्वारा सृजित अंडमान की बाल कविता का उल्लेख किया गया। आइये अब स्वयं बच्चों द्वारा रचित कविताओं पर विचार करें। द्वीप समूह में विभिन्न संस्थाओं द्वारा समय–समय पर स्वरचित काव्य–पाठ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। विद्यालय और महाविद्यालय स्तर पर भी प्रतियोगिताएं होती रहती हैं। इन आयोजनों में बच्चों की सहभागिता से उनकी काव्य–प्रतिभा का पता चलता है। विभिन्न विद्यालयों–महाविद्यालयों की ओर से विभिन्न अवसरों पर स्मारिकाओं का प्रकाशन किया जाता है। उनमें बच्चों का अपना अनुभव–संसार, अपना शब्द और शिल्प कविता का रूप लेकर आया है। सरस्वती शिशु मंदिर, पत्थर गड्डा, पोर्टब्लेयर की रजत जयंती स्मारिका 'वीर द्वीप' में सातवीं कक्षा की पूजा लकडा की कविता है– 'चंदा मामा आता है, बच्चों को बुलाता है

आओ बच्चों मिलेंगे, आंख मिचौली खेलेंगे
बच्चे बोले मामूजी, ऊपर कैसे आवें जी
आकाश में तुम्हारा घर, हम रहते हैं धरती पर।'

डॉ. व्यास मणि त्रिपाठी के संपादन में प्रकाशित 'द्वीप लहरी' में 'नई कलम' के अंतर्गत द्वीप समूह के बच्चों की कविताएं प्रकाशित हुई हैं। उनमें बच्चों की भावाभिव्यंजना देखते ही बनती है। द्वीप समूह में हिंदी बाल कविता की तुलना में बाल कहानियों की रचना कम हुई है। यह यहां के कहानीकारों की बाल कहानी के प्रति उदासीनता ही मानी जाएगी। यही स्थिति बाल नाटक, बाल एकांकी और बाल उपन्यास को लेकर भी है। यह बात अलग है कि विद्यालयों में अनेक अवसरों पर बाल कलाकारों द्वारा नृत्य नाटिका, रूपक, एकांकी आदि का मंचन किया जाता है। उन्हें देखकर बाल कलाकारों की प्रतिभा की दाद देनी पडेगी। कई संस्थाएं समय–समय पर बाल कलाकारों की प्रतिभा को निखारने के लिए बाल नाटकों का मंचन और कार्यशालाओं का आयोजन करती हैं। इतने के बावजूद यह कहना पडेगा कि उनका प्रकाशित साहित्य बहुत कम है। अंडमान का हिंदी बाल साहित्य अपनी यात्रा पर गतिशील है। अभी उसको राजमार्ग नहीं मिला है लेकिन उसका पथ प्रशस्त है।

– एन. जी. २२ टाइप–५,
नया गांव, चक्कर गांव,
पोर्टब्लेयर, अंडमान ७४४११२
(वीणा अप्रैल २०२२ अंक से)

व्यंग्यकार - हरिशंकर परसाई

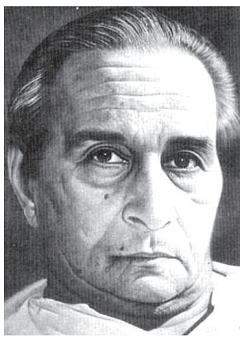

हरिशंकर परसाई हिन्दी के ऐसे साहित्यकार हैं जिन्होंने व्यंग्य को साहित्य में प्रतिष्ठा दिलाई। समीक्षक इन रचनाओं को नजरअन्दाज कर जाते थे। परसाईजी ने व्यंग्य को साहित्य-विधा के रूप में प्रतिष्ठित किया।

आज पहला सफेद बाल दिखा। कान के पास काले बालों के बीच से झाँकते इस पतले रजत-तार ने सहसा मन को झकझोर दिया।

ऐसा लगा जैसे वसन्त में वनश्री देखता घूम रहा हूँ कि सहसा किसी झाडी से शेर निकल पडे।

या पुराने जमाने में किसी मजबूत माने जाने वाले किले की दीवार पर रात को बेफिक्र घूमते गरबीले किलेदार को बाहर से चढते हुए शत्रु के सिपाही की कलगी दिख जाए;

या किसी पार्क के कुंज में अपनी राधा को हृदय से लगाये प्रेमी को एकाएक राधा का बाप आता दिख जाए;

कालीन पर चलते हुए काँटा चुभने का दर्द बडा होता है। मैं अभी तक कालीन पर चल रहा था। रोज नरसीसस जैसी आत्म-रति से आईना देखता था, घुँघराले, काले केशों को देखकर, सहलाकर, सँवारकर, प्रसन्न होता था। उम्र को ठेलता जाता था, वार्द्धक्य को अँगूठा दिखाता था। पर आज कान में यह सफेद बाल फुसफुसा उठा, ''भाई मेरे, एक बात 'कानफ्रिडेन्स' में कहूँ -अपनी दूकान समेटना अब शुरू कर दो!''

तभी से दुखी हूँ। ज्ञानी समझायेंगे-जो अवश्यम्भावी है, उसके होने का क्या दुख? जी हाँ, मौत भी तो अवश्यम्भावी है। तो क्या जिन्दगी-भर मरघट में अपनी चिता रचते रहें? और ज्ञान से कहीं हर दुख जीता गया है? वे क्या कम ज्ञानी थे, जो मरणासन्न लक्ष्मण का सिर गोद में लेकर विलाप कर रहे थे- 'मेरो सब पुरुषारथ थाको!' स्थितप्रज्ञ दर्शन अर्जुन को समझाने वाले की आँखें उद्धव से गोकुल की व्यथा-कथा सुनकर, डबडबा आई थीं। मरण को त्यौहार माननेवाले ही मृत्यु से सबसे अधिक भयभीत होते हैं। वे त्यौहार का हल्ला करके अपने हृदय के सत्य भय को दबाते हैं।

मैं वास्तव में दुखी हूँ। सिर पर सफेद कफन बुना जा रहा है; आज पहला तार डाला गया है। उम्र बुनती जाएगी इसे और यह यौवन की लाश को ढँक लेगा। दुख नहीं होगा मुझे? दुख उन्हें नहीं होगा, जो बूढे ही जन्मे हैं।

मुझे गुस्सा है, इस आईने पर। वैसे तो यह बडा दयालु है, विकृति को सुधारकर चेहरा सुडौल बनाकर बताता रहा है। आज एकाएक यह कैसे क्रूर हो गया! क्या इस एक बाल को छिपा नहीं सकता था? इसे दिखाए बिना क्या उसकी ईमानदारी पर बडा कलंक लग जाता? उर्दू कवियों ने ऐसे संवेदनशील आईनों का जिक्र किया है, जो माशूक के चेहरे में अपनी ही तस्वीर देखने लगते हैं, जो उस मुख के सामने आते ही गश खाकर गिर पडते हैं; जो उसे पूरी तरह प्रतिबिम्बित न कर सकने के कारण चटक जाते हैं। सौन्दर्य का सामना करना कोई खेल नहीं है। मूसा

बेहोश हो गया था! ऐसे भले आईने होते हैं, उर्दू कवियों के। और यह एक हिन्दी लेखक का आईना है!

मगर आईने का क्या दोष? बाल तो अपना सफेद हुआ है। सिर पर धारण किया, शरीर का रस पिलाकर पाला, हजारों शीशियाँ तेल की उंडेल दीं– और ये धोखा दे गए। संन्यासी शायद इसीलिए इनसे छुट्टी पा लेता है कि उस विरागी का साहस भी इनके सामने लडखडा जाता है।

आज आत्मविश्वास उठा जाता है; साहस छूट रहा है। किले में आज पहली सुरंग लगी है। दुश्मन को आते अब क्या देर लगेगी!

क्या करूँ! इसे उखाड फेकूँ? लेकिन सुना है, यदि एक सफेद बाल को उखाड दो, तो वहाँ एक गुच्छा सफेद हो जाता है। रावण जैसा वरदानी होता है, कम्बख्त! मेरे चाचा ने एक नौकर सफेद बाल उखाडने के लिए ही रखा था, पर थोडे ही समय में उनके सिर पर काँस फूल उठा था। एक तेल बडा 'मनराखन' हो गया है। कहते हैं उससे बाल काले हो जाते हैं। (नाम नहीं लिखता, व्यर्थ प्रचार होगा) उस तेल को लगाऊँ? पर उससे भी शत्रु मरेगा नहीं, उसकी वर्दी बदल जाएगी। कुछ लोग खिजाब लगाते हैं। वे बडे दयनीय होते हैं। बुढापे से हार मानकर, यौवन का ढोंग रचते हैं। मेरे एक परिचित खिजाब लगाते थे। शनिवार को वे बूढे लगते और सोमवार को जवान–इतवार उनका रँगने का दिन था। न जाने वे ढलती उम्र में काले बाल किसे दिखाते थे। शायद तीसरे विवाह की पत्नी को। पर वह उन्हें बाल रँगते देखती तो होगी ही। और क्या स्त्री को केवल काले बाल दिखाने से यौवन का भ्रम उत्पन्न किया जा सकता है? नहीं, यह सब नहीं होगा। शत्रु को सिर पर बिठाये रखना पडेगा। जानता हूँ, यह धीरे–धीरे सब वफादार बालों को अपनी ओर मिला लेगा।

याद आती है, मेरे समानधर्मा, कवि केशवदास की, जिसे 'चन्द्रवदन मृगलोचनी' ने बाबा कह दिया, तो वह बालों पर बरस पडा था। हे मेरे पूर्वज, दुखी, रसिक कवी। तेरे मन की ऐंठन मैं अब बखूबी समझ सकता हूँ। मैं चला आ रहा हूँ, तेरे पीछे। मुझे 'बाबा' तो नहीं पर 'दादा' कहने लगी है– बस, थोडा ही फासला है।

मन बहुत विचलित है। आत्म–रति के अतिरेक का फल 'नरसीसस ने भोगा था, मुझे भी भोगना पडेगा। मुझे एक अन्य कारण से डर है। मैंने देखा है, सफेद बाल के आते ही आदमी हिसाब लगाने लगता है कि अब तक क्या पाया, आगे क्या करना है और भविष्य के लिए क्या संचय किया। हिसाब लगाना अच्छा नहीं होता। इससे जिन्दगी में वणिक–वृत्ति आती है और जिस दिशा से कुछ मिलता है, आदमी उस दिशा में सिजदा करता है। बडे–बडे 'हीरो' धराशायी होते हैं। बडी–बडी देव –प्रतिमाएँ खण्डित होती हैं। राजनीति, साहित्य, जन–सेवा के क्षेत्र की कितनी महिमा–मण्डित मूर्तियों इन आँखों ने टूटते देखी हैं, कितनी आस्थाएँ भंग होते देखी हैं। बडी खतरनाक उम्र है, यह; बडे समझौते होते हैं सफेद बालों के मौसम में। यह सुलह का झण्डा सिर पर लहराने लगा है। यह घोषणा कर रहा है, 'अब तक के शत्रुओ! मैंने हथियार डाल दिए हैं। आओ, सन्धि कर लें।' तोक या सन्धि होगी–उनसे जिनसे संघर्ष होता रहा? समझौता होगा, उससे जिसे गलत मानता रहा?

पर आज एकदम ये निर्णायक प्रश्न मेरे सामने क्यों खडे हो गए? बाल की जड बहुत गहरी नहीं होती। हृदय से तो उगता नहीं है। यह सतही है, बेमानी? यौवन सिर्फ काले बालों का नाम नहीं है। यौवन नवीन भाव, नवीन विचार ग्रहण करने की तत्परता का नाम है। यौवन साहस, उत्साह, निर्भयता और खतरे–भरी जिन्दगी का नाम है, यौवन लीक से बच निकलने की इच्छा का नाम है। और सबसे

ऊपर, बेहिचक बेवकूफी करने का नाम यौवन है। मैं बराबर बेवकूफी करता जाता हूँ। यह सफेद झण्डा प्रवंचना है। हिसाब करने की कोई जल्दी नहीं है। सफेद बाल से क्या होता है?

यह सब मैं किसी दूसरे से नहीं कह रहा हूँ, अपने आपको ही समझा रहा हूँ। द्विमुखी संघर्ष है यह- दूसरों को भ्रमित करना और मन को समझाना। दूसरों से भय नहीं। सफेद बालों से किसी और का क्या बिगडेगा? पर मन तो अपना है। इसे तो समझाना ही पडेगा कि भाई तू परेशान मत हो। अभी ऐसा क्या हो गया है। यह तो पहला ही है। और फिर अगर तू नहीं ढीला होता, तो क्या बिगडने वाला है।

पहले सफेद बाल का दिखना एक पर्व है। दशरथ को कान के पास सफेद बाल दिखे, तो उन्होंने राम को राजगद्दी देने का संकल्प किया। उनके चार पुत्र थे। उन्हें देने का सुभीता था। मैं किसे सौपूँ? कोई कन्धा मेरे सामने नहीं है, जिस पर यह गौरवमय भार रख दूँ। किस पुत्र को सोपूँ? मेरे एक मित्र के तीन पुत्र हैं। सवेरे यह मेरा दशरथ अपने कुमारों को चुल्लू-चुल्लू पानी मिला दूध बाँटता है। इनके कन्धे ही नहीं है-भार कहाँ रखेंगे? बडे आदमियों के दो तरह के पुत्र होते हैं- वे जो वास्तव में हैं, पर कहलाते नहीं हैं और वे जो कहलाते हैं, पर हैं नहीं। जो कहलाते हैं, वे धन-सम्पत्ति के मालिक बनते हैं और जो वास्तव में हैं, वे कहीं पंखा खींचते हैं या बर्तन माँजते हैं। होने से कहलाना ज्यादा लाभदायक है।

अपना कोई पुत्र नहीं। होता तो मुश्किल में पड जाते। क्या देते? राज-पाट के दिन गए, धन-दौलत के दिन हैं। पर पास ऐसा कुछ नहीं है, जो उठाकर दे दिया जाए। न उत्तराधिकारी है, न उसका प्राप्य। यह पर्व क्या बिना दिए चला जाएगा?

पर हम क्या दें? महायुद्ध की छाया में बढे हम लोग; हम गरीबी और अभाव में पले लोग; केवल जिजीविषा खाकर जिये हम लोग-हमारी पीढी के

संस्था की सन्माननीय सदस्या डॉ. वासंती साळवेकर द्वारा लिखित कर्नाटक संगीत के प्रणेता संत पुरंदरदास फगरेजी को सादर पुरस्कृत भेंट । पुस्तक अच्छी बनी है।

शुभेच्छा

- ज.गं. फगरे

बाल तो जन्म से ही सफेद हैं। हमारे पास क्या है? हाँ, भविष्य है, लेकिन वह भी हमारा नहीं, आनेवालों का है। तो इतना रंक नहीं हूँ-विराट् भविष्य तो है। और अब उत्तराधिकारी की समस्या भी हल हो गई। पुत्र तो पीढियों के होते हैं। केवल जन्मदाता किसी का पिता नहीं होता। विराट भविष्य को एक पुत्र ले भी कैसे सकता है? इससे क्या कि कौन किसका पुत्र होगा, कौन किसका पिता कहलाएगा। मेरी पीढी के समस्त पुत्रों! मैं तुम्हें वह भविष्य ही देता हूँ। यद्यपि वह अभी मूर्त्त नहीं हुआ है, पर हम जुटे हैं, उसे मूर्त्त करने। हम नींव में धँस रहे हैं कि तुम्हारे लिए एक भव्य भविष्य रचा जा सके। वह तुम्हारे लिए एक वर्तमान बनकर ही आएगा- हमारा तो कोई वर्तमान भी नहीं था। मैं तुम्हें भविष्य देता हूँ और इस देने का अर्थ यह है कि हम अपने आपको दे रहे हैं, क्योंकि उसके निर्माण में अपने-आपको मिटा रहे हैं। लो, सफेद बाल दिखने के इस पर्व पर यह तुम्हारा प्राप्य सँभालो। होने दो हमारे बाल सफेद। हम काम में तो लगे हैं-जानते हैं कि काम बन्द करने और मरने का क्षण एक ही होता है।

हमें तुमसे कुछ नहीं चाहिए। ययाति जैसे स्वार्थी हम नहीं हैं जो पुत्र की जवानी लेकर युवा हो गया था। बाल के साथ, उसने मुँह भी काला कर लिया।

हमें तुमसे कुछ नहीं चाहिए। हम नींव में धँस रहे हैं; लो, हम तुम्हें कलश देते हैं।

('श्रेष्ठ निबन्ध' पुस्तक से)

स्वातंत्र्यवीर अर्थात् समरसता का नंदादीप

अनुवाद - डॉ. वासंती साळवेकर

दोषविरहित हिन्दू समाज की रचना के लिए स्वातंत्र्यवीर विनायक दामोदर सावरकरजी ने अथक प्रयास किये। आप आधुनिक भारत के महान शिल्पकार थे। जातिभेद नष्ट करने के लिए तथा भेदभाव विरहित समाज की निर्मिती की दृष्टि से आपका योगदान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। आज २८ मई – सावरकरजी की जयन्ती है। इस उपलक्ष्य में उनके कार्य का पुनर्विलोचन प्रस्तुत है।

दोषविरहित हिन्दू समाज की रचना के लिए जिन्होंने अथक प्रयास किये उन समाजसुधारकों में सावरकर जी अग्रगण्य है। इन्होंने हिन्दू समाज के उद्धार के लिए आजीवन सार्थक प्रयास किये। हिन्दू धर्म पर लगे अस्पृश्यता के कलंक को धोने के लिए वे सतत प्रयत्नशील थे। 'हिन्दू महासभा' के कार्यों में सम्मिलित हाने के कारण वे स्वाभाविक रूपसे अनेक सार्वजनिक कार्यों में सहयोग देने लगे। सावरकर प्रेमी स्वयं को सावरकर वादी कहते थे।

सन् १९२५ ऐतिहासिक घटनाओं की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण वर्ष था। इसी वर्ष के मार्च महिने में संघ संस्थापक डॉ. हेडगेवारजी की सावरकर जी के साथ मुलाकात हो गयी। इस मुलाकात में हेडगेवारजीने संघ के विचार तथा संपूर्ण कार्य के संबंध में सावरकर जी के साथ प्रदीर्घ चर्चा की। डॉ. हेडगेवार दोषविरहित हिन्दू समाजकी पुनर्रचना की दृष्टि से एक संघटन का निर्माण कर रहे थे। इसलिए डॉक्टरजी का स्वागत करते हुए सावरकरजी ने उन्हें शुभेच्छाएँ दी। मार्च सन् १९२७ में काँग्रेस के लोगों के अनुरोध पर गांधीजी रत्नागिरी गये। वहाँ की नगरपालिका ने उन्हें एक विशेष कार्यक्रम में मानपत्र अर्पण किया। रत्नागिरी सावरकरजी की कर्मभूमि है, यह बात गांधीजी जानते थे। कार्यक्रम के बाद, स्थानीय काँग्रेसजनों के विरोध को टालकर गांधीजी सावरकरजी से मिलने के लिए उनके घर गये थे। उस समय सावरकरजी ज्वरसे पीडित थे तथापि उन्होंने महात्मा गांधी और कस्तुरबा का सानंद स्वागत किया। बाद में दोनों में बहुत विषयोंपर चर्चा हुई। उस समय दोनों में मतभेद होते हुए भी किंचित मात्र कटुता नहीं थी।

रत्नागिरी के विठ्ठल मंदिर में विठ्ठल नाम का संकीर्तन करते हुए अस्पृश्यों को प्रवेश मिला, तब उसे कानून का संरक्षण प्राप्त था। सावरकर जी इस घटना से अत्यंत आनंदित हो गये। अस्पृश्यों के न्याय्य अधिकारों के लिए डॉ. आंबेडकरजी ने जो संग्राम शुरू किया था वह उन दिनों बहुत प्रबल था। सन् १९२७ में बाबासाहब अम्बेडकर जी ने महाड में विद्रोह का पहला शंखनाद किया। महाड के 'चवदार तळे' के लिए सत्याग्रह करते हुए डॉ. अम्बेडकरजीने सामाजिक न्याय्य अधिकारों के लिए अत्यधिक प्रयास किये। इस समय यदि किसीने अम्बेडकरजी के सत्याग्रह का मन:पूर्वक समर्थन किया तो वे थे एकमात्र स्वा. सावरकरजी।

दोषविरहित समाज की रचना करने के लिए सावरकरजीने अनेक उपक्रम शुरू किये। जातिभेद नष्ट करने के लिए तथा भेदभाव विरहित समाज रचना के उद्देश्य से सावरकरजीने और एक कदम

उठाया और वह था ‘स्नेहभोजन’ का। इस स्नेहभोजन के माध्यम से समाज में बंधुता का रिश्ता निर्माण हो सकता था। पर कुछ कर्मठ विचारों के लोगों ने इस संकल्पना का विरोध किया। उस वक्त सावरकरजीने धर्मग्रंथों के कुछ उदाहरण प्रस्तुत करते हुए उन्हें परावृत्त किया।

सावरकरजी आधुनिक भारत के महान शिल्पकार थे। बीसवीं शतीपर सावरकरजी के कार्य की छाप स्पष्टत: अंकित है। वे क्रांतिकारकों के स्फूर्तिस्थान थे। २८ मई सन् १८८३ में नासिक के पास ‘भगुर’ में उनका जन्म हुआ और २६ फरवरी १९६६ में उन्होंने अपनी देह भारतमाता के चरणों में अर्पित कर दी। सावरकरजी के महानिर्वाण से सावरकरवादी जनता अत्यंत दु:खी हो गयी थी। समरस समाज की रचना के लिए उन्होंने देहार्पण किया।

सावरकरजी का जीवन एक धधकता हुआ अग्निकुंड था। उनका व्यक्तिमत्त्व अत्यंत प्रभावी था। वे क्रांतिकारक, विधिज्ञ, जुझार पत्रकार, संपादक, लेखक, साहित्यिक, नाटककार, प्रतिभाशाली कवी, विचारक, प्रखर विज्ञाननिष्ठ, प्रखर देशभक्त, प्रभावी वक्ता, महान समाजसुधारक, अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के जानकार और भाष्यकार, ज्ञानपुरूष, समताप्रेमी साथही असामान्य अनितीय ऐसा उनका बहुआयामी व्यक्तिमत्त्व था।

सावरकर सच्चे ‘हिन्दुहृदय सम्राट’ थे। यह सत्य है कि समर्थ भारत के लिए सावरकरजी विचारधारा के अनुकरणसे हम सबका जीवन गतिमान हो जाएगा। यही उनको आज के जयन्ती दिन के उपलक्ष्य में हमारी आदरांजली है।

मूल लेखक – नंदकुमार ज्ञानोबा राऊत
(ज्येष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता)
(महाराष्ट्र टाईम्स २८ मई २०२२)

जान लो, भगवद्‌गीता

‘जान लीजिए भगवद्‌गीता को’ यह डॉ. निर्मला सारडा की किताब है जिसमें गीता के १८ अध्यायों का सारांश लेखिका ने दिया है। स्वयं भगवान कृष्ण ने अर्जुन को युद्धभूमी पर गीता सुनायी थी और जिंदगी को सफल बनाने के सभी महत्त्वपूर्ण नुस्खे बताये थे जो हम सभी को अमल में लाने चाहिए ताकि हम भी अपना जीवन सार्थक ढंग से जी सकें।

गीता का प्रमुख उद्देश्य है कि हम परमात्मा को समझ लें। बचपन से ही हमें गीता में कही गई बातों का चिंतन, मनन करना चाहिए। केवल मात्र गीता के ७०० श्लोक कंठस्थ कर लेने से गीता समझ में नहीं आती। इसी वजह से मैंने हर अध्याय की महत्त्वपूर्ण बातों पर प्रकाश डाला है।

भगवान श्रीकृष्ण ने हर बात पर जिंदगी को सफल बनाने के हर पहलू पर विचार किया है। हमारा स्वास्थ्य, हमारा खानपान, हमारा आचार– हमारे विचार सभी बातें श्रीकृष्ण भगवान ने बहुत अच्छी तरह से समझायी है। अर्जुन की तरह हम सभी दुविधा में फँसे रहते हैं। क्या करें और क्या न करें... हमें नहीं समझता। हमारी हर उलझन, हर समस्या का समाधान हमें गीता को पढकर मिल जाता है। हम लोग सौभाग्यशाली हैं कि हमारे देश में यह महत्त्वपूर्ण ग्रंथ हमें उपलब्ध है। यदि हम इस ग्रंथ को पढने और समझने की कोशिश ना करें तो यह हमारी भूल होगी। हमारी यह बडी गलती होगी। मैंने पुणे के ख्यातिप्राप्त प्रकाशक श्री. रामचंद्रजी जोरवर की पुस्तक ‘साधी सोपी श्रीमद्‌भगवद्‌गीता’ पढी और गीता को समझकर यह मेरी छोटी किताब लिखी ताकि हर कोई इसे पढें और समझे।

– डॉ. निर्मला सारडा

ई–१०/११, पाटील रिजन्सी,
१५, एरंडवणे, पुणे ४११००४

सूर-साहित्य की प्रासंगिकता

- हरेराम समीप

महात्मा सूरदास हिन्दी वाङ्मय के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं, भक्त कवि हैं, कालजयी कवि हैं। काव्याभिव्यक्ति में हिन्दी में उनके जैसा दूसरा कवि नहीं है, उन्हें कृष्ण भक्तिधारा के उद्भव और प्रवर्तन का श्रेय भी जाता है। वास्तव में अपने काव्य से उन्होंने भक्तिधारा की दिशा ही बदलकर रख दी, उन्होंने पहली बार भक्ति को ईश-वंदन से लीला - वर्णन में तब्दील कर दिया और तब से ईश-भक्ति कृष्ण के प्रेम -रंग में रंगने लगी। उत्तर भारतीय समाज में यह 'लीला वर्णन' एक अद्भुत क्रान्तिकारी परिवर्तन के रूप आया। पिछले पांच सौ साल में यह परिवर्तन एक सुदृढ परम्परा के रूप में विश्व व्यापी होता रहा लेकिन स्वयं इस क्रान्तिकारी कवि की छवि नहीं बदली और लगभग वही की वही रही- एक ऐसे भक्त कवि की जो-कृष्ण की बाल-लीला के गान में मग्न रहता था और जो नेत्रहीन होते हुए भी ब्रजधाम में प्रतिदिन नए पदों के गायन से भक्तों को कृष्ण-लीला का दिव्य साक्षात्कार कराता रहता था।

या फिर यह कह दिया गया कि इन सवा लाख पदों में से लगभग ८००० पद उनके उस मूल ग्रंथ 'सूरसागर' में संकलित हुए हैं, जो एक 'लीला प्रबन्ध' है और जिसमें उन्होंने बाल कृष्णकाव्य को अपना मुख्य विषय बनाया है। कहा यह भी है कि यह 'सूरसागर' ग्रंथ श्रीमद्भागवत के दशम् स्कन्ध के आधार पर रचा गया है, जो एक स्वतंत्र काव्य है। इसमें भ्रमरगीत सबसे मर्मस्पर्शी अंश है, जहाँ कविता और शास्त्र का सुंदर समन्वय प्रस्तुत किया गया है।

या यह कि भ्रमरगीत में सगुण और निर्गुण का अद्भुत विमर्श प्रस्तुत किया गया है। भ्रमरगीत में निर्गुण पर सगुण, शुष्कता पर सरसता और दर्शन पर प्रेम ने विजय पायी है। भ्रमरगीत में सूर की उत्कृष्ट वाक्यपटुता और विद्वता का जो परिचय मिलता है, वह उनकी जीवन-दृष्टि, उनके सूक्ष्म धर्म-ज्ञान व विराट दर्शन से आलोकित हुआ है। बडे-बडे अध्येता अपने पांडित्य से उनकी कलात्मक प्रतिभा पर यूँ अचरज भी व्यक्त कर देते हैं कि बाल-लीला वह भी ठेठ अभिधा शैली में गजब के हैं ये सूरदास जी आदि...आदि... और बात ले-दे के समाप्त हो जाती है...

कभी कभार यह भी बता दिया जाता है कि सूरसागर के अतिरिक्त दो संग्रह 'सूर सारावली' और 'साहित्य लहरी' में भी उनकी रचनाएँ संग्रहीत हैं। 'सूर सारावली' में होली के दृश्यों के माध्यम से जीवन के सृजन के पद हैं। साहित्य लहरी में परब्रह्म को समर्पित गीत तथा काव्यांगों को लेकर काव्य श्रृंगारिक पंक्तियाँ संग्रहीत की गई हैं।

सूर-साहित्य के वैराट्य का मूल तत्व हैं- प्रेम और भक्ति यह प्रेम और भक्ति का चित्रण इतना हृदयस्पर्शी और भावपूर्ण है कि इसे सुनते या पढते हुए यह मन में जीवंत होने लगता है। उनके पदों में जो लयात्मकता है, जो संगीतात्मकता है वह हमारी स्मृति में स्थायी रूप से जगह बना लेती है। सबसे

बडा सौभाग्य और गौरव की बात है कि सूरदास के पदों की भाषा हमारी ब्रज भाषा है, जो हमारे क्षेत्र की जनभाषा है। यही कारण रहा कि सूरकाव्य ने सहज ही लोककाव्य का रूप लिया और इसलिए भी कि इन पदों में ग्राम्य-जीवन और प्रकृति के सुंदर सजीव चित्र मिलते हैं, जिनमें 'गो' तत्त्व अर्थात गौ संस्कृति अत्यंत मुखर होकर चित्रित हुई है, तब ब्रजवासी उनकी ओर क्यों न खिंचे चले आए होंगे। कहा जाता है कि एक बार तानसेन और बादशाह अकबर भी सूरदास जो को सुनकर मुग्ध हो गए थे।

ऊधो कर्मन की गति न्यारी

सब नदियां जल भरि भरि रहियां सागर केहि बिध खारी

उज्ज्वल पंख दिये बगुला को कोयल केहि गुनकारी

सुन्दर नयन मृगा को दीन्हे बन बन फिरत उजारी

मूरख मूरख राजे कीन्हे पंडित फिरत भिखारी

सूर स्याम मिलने की आसा छिन छिन बीतत भारी

ऐसे में सूरदास ने कृष्ण-लीला वर्णन से ब्रजधाम में समानता और आशा का संदेश दिया और जनता में नवजीवन का संचार किया। तभी तो उनके काव्य में गोप, गोपी व गोपाल सब एक समान हैं, न कोई छोटा है न कोई बडा।

सूरदास ने मानवीय राग का बडा निष्छल व सहज रूप प्रस्तुत किया है। यह प्रेम सहज परिवेश में सहयोगी भाव वृत्तियों से संपृक्त होकर यहाँ विशेष अर्थवान हो गया है। कृष्ण से कवि का संबन्ध साख्य-भाव का है। इस काल के साहित्य में धार्मिकता से अधिक मानवीय भाव की अभिव्यक्ति मिलती है। वात्सल्य भाव के अंतर्गत बाल-लीलाएँ वास्तव में माँ यशोदा के हृदय की सम्पूर्ण झांकी प्रस्तुत करती है। सूरदास वात्सल्य रस के तो सम्राट माने जाते हैं। सचमुच वात्सल्य वर्णन का इतना श्रेष्ठ कवि संसार में दूसरा नहीं दिखाई देता। इसी वात्सल्य का एक अद्‌भुत चित्र देखें-

अनमोल वचन

हे मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर, मैं दिन को और रात को तेरे आगे चिल्लाता आया हूँ। मेरी प्रार्थना तुझ तक पहुँचे, मेरे चिल्लाने की ओर कान लगा!क्योंकि मेरा प्राण क्लेश में भरा हुआ है, और मेरा प्राण अधोलोक के निकट पहुँचा है। मैं कबर में पडनेवालों में गिना गया हूँ;मैं बलहीन पुरूष के समान हो गया हूँ। मैं मुर्दों के बीच छोडा गया हूँ, और जो घात होकर कबर में पडे हैं, जिन को तू फिर स्मरण नहीं करता और वे तेरी सहायता रहित हैं, उनके समान मैं हो गया हूँ। तूने मुझे गद्दे के तल ही में, अन्धेरे और गहरे स्थान में रखा है। तेरी जलजलाहट मुझी पर बनी हुई है, और तूने अपने सब तरंगों से मुझे दु:ख दिया है; तूने मेरे पहचान वालों को मुझ से दूर किया है; और मुझको उनकी दृष्टि में घिनौना किया है। मैं बन्दी हूँ और निकल नहीं सकता;दु:ख भोगते भोगते मेरी आँखें धुंधला गई। हे परमेश्वर मैं लगातार तुझे पुकारता और अपने हाथ तेरी ओर फैलाता आया हूँ।

– भजन संहिता

जसोदा हरि पालने जुलावै

हलरावै, दुलरावे,मल्हावै जोई सोई कछु गावै

मेरे लाल कों आऊ निंदरिया काहे न आनि सुवावै

काहे नहिं बेगहि आवैतोकीं कान्ह बुलावै

कबहूं पलक हरि मूंद लेत हैं कबहू अधर फरकावै

सोवत जान मौन हुई कै रहि करि करि सेन बतावै

इहि अंतर अकुलाइ उठे हरि जसुमति मधुरै गावै

जो सुख सूर अमरमुनि दूरलब सो नंद-भामिनि पावै

सुविचार

१) धन संभार करनेवाला संसारी, मन सँभाले वह संत।
२) पाप कर्म करने से पाप का समर्थन, करनेवाला महापापी
३) चंदन और वंदन हमेशा शांति, शीतलता देते हैं।
४) दूसरे का दुख देखकर जो दुखी और सुख देखकर सुखी होता वही सज्जन
५) आज का मौजमजाक कल की गरज याने आवश्यकता न बने।
६) विचार, आचार और उच्चार यही अंत में प्रचार
७) कृति को माननेवाला ईश्वर, आकृति को पसंद करनेवाला मानव
८) शील, शरीर, शिक्षण, अनुशासन और संगठन- ये हैं पंचप्राण
९) जैसी दृष्टि, वैसी सृष्टि
१०) अमृत पीनेवाले देव, खुशी से विष पीनेवाले महादेव

उनका प्रत्येक पद बताता है कि सूर मूलत: भक्ति चेतना के कवि हैं। वे भक्त पहले हैं, दार्शनिक बाद में है तथा समाज सुधारक या कुछ और उसके बाद में... इसलिए उन्होंने दार्शनिकता व समाज सुधार का प्रतिपादन भी अपने भाव-भीने रसात्मक काव्य के माध्यम से ही किया है।

कृष्ण से उनके साख्यभाव का यह प्रचलित पद देखिएह्न-

प्रभु मोरे अवगुन चित न धरो
समदरसी है नाम तिहारो चाहो तो पार करो
एक लोहा पूजा में राखत एक रहत ब्याध घर परो
पारस गुण अवगुण नहिं चितवन कंचन करत खरो
एक नदिया एक नाल कहावत मैलो ही नीर भरो
जब दौ मिलकर एक बरन भई सुसरी नाम परो
एक जीव एक ब्रहम कहावै सूर श्याम झगरो
अब की बेर मोहे पार उतारो नहिं पन जात टरो

सूरदास को नारियों का सबसे बडा हितैषी कवि माना जा सकता है। सूरदास के लिए नारी काम या वासना का प्रतीक कभी नहीं बल्कि कोमलता, प्रेम, सृजन और संवेदना की मूर्ति के रूप में व्यक्त हुई है। नारियों पर हो रहे अत्याचार और भेदभाव को समाप्त करने के लिए सूरसाहित्य से आज के कवियों को प्रेरणा लेना चाहिए। सच तो यह है कि तत्कालीन शासन व्यवस्था में नारियों की बहुत दुर्दशा थी, जिसके प्रतिकार में और मुस्लिम शासन के बढते वर्चस्व के सामने 'भक्ति आंदोलन' के माध्यम से एक नयी वैकल्पिक लोकधर्मी समाज व्यवस्था की यह अवधारणा सूरदास की ही देन है।

अर्थात सूर-साहित्य आज भी जीवन के सत्य, जीवन के संरक्षण और जीवन के विकास की ओर उन्मुख कालजयी काव्य है, जो किसी युग की सीमाओं में सिमटकर समाप्त नहीं हो सकता। वह तब भी प्रासंगिक था, अब भी प्रासंगिक है और सतत प्रासंगिक रहेगा। हाँ, इस इलेक्ट्रानिक और डिजिटल संस्कृति के समय में सूरकाव्य के मूल्यांकन के प्रति अध्येताओं के एक नए दृष्टिकोण की आवश्यकता अवश्य है। इस साहित्य को डिजिटाईज होकर जन जन को उपलब्ध होना चाहिए, यह हमारी जबाबदारी भी है और जिम्मेदारी भी है कि हम 'भक्तिकाल' के उस सृजन को प्रकाशित करें जिसे हमारे महान भक्त कवियों ने संघर्ष और साधना से अर्जित किया है।

सम्पर्क : ३९५ सेक्टर ८,
फरीदाबाद-१२१००६
('हरिगंधा' मई २०२२ अंक से)

शहीद की माँ

– सूरत सिंह 'आर्य'

सखि! मुझे सांत्वना दो, रूलाती क्यों हो?
मैं शहीद की माँ हूँ, भुलाती क्यों हो?
धैर्य दिलाने कि आई रुलाने?
सुत कि अमरता पै, आँसू बहाने।
मेरा वज्र-सा हृदय पिंघलाने,
कि आई हो श्रद्धांजलि चढाने?
वीर-माता को सिंहनी बनाने,
या सृगाली की पदवी दिलाने?
कह दो, सखि!
कह दो, लज्जाती क्यों हो?
मैं शहीद की माँ हूँ, भुलाती क्यों हो?

अपने ही करों से-सुवन को बुलाकर,
संगर की सज्जा का तिलक चढाकर
निज पयोधरों का दुग्ध पिलाकर;
भेजा था उसको मृत्यु से जिलाकर;
'रणचंडी को वरना' ऐसे समझाकर;
'करना या मरना' यह पाठ पढाकर
नत-शीर्ष पुत्र ने कहा,
'माँ घबराती क्यों हो?
मैं शहीद की माँ हूँ, भुलाती क्यों हो?

चला मुस्काता, स्नेह टपकाता
स्मृति का अमिट दिया जलाता;
अग्नि ज्वाला-चिंगारी फैलाता
भारत माँ की जय-जय सुनाता
अशोक-चक्र-ध्वजा फहराता
दिग्दिगन्तों में हलचल मचाता
स्निग्ध-कोमल चित्रण
हृदय से हटाती क्यों हो?
मैं शहीद की माँ हूँ, भुलाती क्यों हो?

समरांगण में जिसने तांडव दिखाया,
नग-सा अटल रहा लोहा बजाया
तडित ज्यों कडका अरि को थर्राया
जिसने अरि की अग्नि को बुझाया

बढ गया आगे ना पीछे को आया
आँसू क्यों? सखि! गाओ बधावा
नाचो, गाओ, बजाओ, सकुचाती क्यों हो?
मैं शहीद की माँ हूँ, भुलाती क्यों हो?

हंस-हंस कर लाल मेरा लडा यों
असुरदल से देवेन्द्र भिडा ज्यों
ओज आनन लख विपक्षी चिडा क्यों?
क्षमा-याचना करें अरि गिडगिडा यों
तेज-तप्त-रवि-आप्त सा चढा यों
हंसो-हंसो सखि! म्लान मुखडा क्यों?
षटरस व्यंजन खाओ, आँसू बहाती क्यों हो?
मैं शहीद की माँ हूँ, भुलाती क्यों हो?

समरांगण रज लो आज ही आई
लाल रंग की (शोणित-सिंजाई)
माथे लगाओ मैंने है मंगवाई
खिलें तन-मन आँखें लुभाई
लो, करो दर्शन-देखो जुन्हाई
मेरे लाल की यह फोटो है आई
फूल बरसाओ सखि!
छाती दहलाती क्यों हो?
मैं शहीद की माँ हूँ, भुलाती क्यों हो?

मरा नहीं सुत अमर हुआ है
सुरपुर-राजसिंहासन छुआ है,
अरि! इतनी अधीर! क्या हुआ है?
देशभक्त पुत्र बना अगुआ है
वे भी धन्य-धन्य अहा! अहा!! हैं,
जो कि चाची, ताई अथवा बुवा है
सपूती हुई हूँ, तुम चिल्लाती क्यों हो?
मैं शहीद की माँ हूँ, भुलाती क्यों हो?

वरदान को अभिशाप न बनाओ,
पुण्य मिला है यों पाप न बनाओ
सुकृति को यों कुकुति न जताओ
आशा पै निराशा की छाया न लाओ
हम धन्य हुई हैं सर्वेश गुण गाओ
वर मांगो सखि! सुपुत्र सब पाओ
मरें देश-हित, ऐसे सुत न चाहती क्यों हो?
मैं शहीद की माँ हूँ, भुलाती क्यों हो?

गर्व से मेरी छाती है फूली,
सुवन मरण का हूँ दुख भूली
अपराधी नहीं था, आई न सूली
अपकीर्ति की भी उडी न धूलि
मैं इसी मस्ती में आज हूँ झूली
क्योंकि उसने अमर-पताका छूली
पुत्र-सुयश-गंग बहती
न गोते लगाती क्यों हो?
मैं शहीद की मां हूँ, भुलाती क्यों हो?

जीना वही जो जीते हैं हंस कर,
मरना वही जो मरते हैं हंस कर,
लडना वही जो लडते हैं हंस कर
प्राणों की बाजी ला चलते हैं हंस कर
वह बसना ही क्या न बसते जो हंस कर?
वह हंसना ही क्या न हंसते जो हंस कर?
हंसो, सखि, हंसो!
मुझे न हंसाती क्यों हो?
मैं शहीद की माँ हूँ, भुलाती क्यों हो?

हंसो, इतनी हंसो, सर्वत्र हंसी फैल जाए,
हमारी हंसी से शत्रु की छाती दहल जाए
दिशायें हंसें नभमंडल में छा जाए
दिव्यंगत पुत्रात्मा हंसे, नाचे और गाए
'मातृशक्ति की जय' हंसी से टकराए
दोनों की भिडत से वज्र बन जाए
हंसो सखि! अरि!
हंसकर न शत्रु रूलाती क्यों हो?
मैं शहीद की माँ हूँ, भुलाती क्यों हो?

सखि! मुझे सांत्वना दो,
रूलाती क्यों हो?
मैं शहीद की मां हूँ,
भुलाती क्यों हो?

सम्पर्क : गांव व डाक-गोरीपुर,
जिला-भिवानी (हरियाणा)
('हरिगंधा' मई २०२२ अंक से)

पं. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी

पं. चन्द्रधर शर्मा गुलेरी का जन्म २५ जुलाई सन् १८८३ को जयपुर में हुआ था। इनके पिता का नाम पं. शिवराम शास्त्री था। पण्डित चन्द्रधर शर्मा गुलेरी एक श्रेष्ठ, कहानी-लेखक, इतिहास और पुरातत्व के गम्भीर विद्वान तथा एक सफल सम्पादक थे। परन्तु हिन्दी-संसार उन्हें केवल एक श्रेष्ठ कहानी-लेखक के रूप में ही जानता और मानता है। उनकी लिखी कहानी 'उसने कहा था' अपने युग की सर्वश्रेष्ठ तथा हिन्दी की एक अत्यन्त श्रेष्ठ कहानी मानी जाती है।

गुलेरी जी अनेक देशी-विदेशी भाषाओं, 'पुरातत्व, ज्योतिष, दर्शन, इतिहास, साहित्य, भाषा-विज्ञान के मर्मज्ञ विद्वान थे। अभी तक उनकी प्रसिद्धि का मूलाधार उनकी यह कहानी ही रही है। हम लोग अभी तक विभिन्न विषयों पर उनके द्वारा लिखे निबन्धों से परिचित नहीं हो पाए है।

गुलेरी जी अपने समय में बहुत प्रसिद्ध थे। एक विद्वान के रूप में उनका सर्वत्र सम्मान होता था। राजस्थान के अनेक शासक उनके प्रशंसक और भक्त थे। आज आवश्यकता इस बात की है कि उनके लिखे सम्पूर्ण साहित्य का संग्रह कर उसका एक संकलन प्रकाशित किया जाय जिससे हम उनके अथाह ज्ञान से लाभ उठा सकें।

ये जयपुर में संस्कृत कालिज के प्रधानाचार्य थे। गुलेरी जी की प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिता की देख-रेख में ही हुई। बाल्यावस्था से ही इन्हें संस्कृत बोलने तथा पढने का अभ्यास कराया गया। शीघ्र ही इन्होंने संस्कृत का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया। अंग्रेजी पढने के लिये जयपुर महाराजा कालेज में गये। जयपुर-राज्य की ओर से उन्हें इस सफलता के लिये स्वर्ण पदक दिया गया।

गुलेरी जी की बुद्धि बडी प्रखर थी; अध्ययन की ओर उनका विशेष झुकाव था। उन्होंने किसी मौलिक ग्रन्थ की रचना नहीं की। उनके लेख उस समय की पत्रिकाओं में ही प्रकाशित होते थे। 'कछुआ धर्म', 'मारेसि मोहिं कुठाऊँ' और शिशुनाग-मूर्तियों पर लिखे हुये उनके लेख बहुत प्रसिद्ध है।उनकी लिखी हुई तीन प्रसिद्ध कहानियाँ मिलती हैं। इन्हीं कहानियों के कारण गुलेरी जी हिन्दी के श्रेष्ठतम कहानीकारों में माने जाते है। ये कहानियाँ 'गुलेरी जी की अमर कहानियाँ' नाम से प्रकाशित हो चुकी है। 'सुखमय जीवन' नाम से इनकी पहली कहानी कलकत्ते के 'भारतमित्र' में प्रकाशित हुई थी। सन् १९१५ में प्रयाग की सरस्वती पत्रिका में 'उसने कहा था' नामक कहानी प्रकाशित हुई जिसने इनके नाम की हिन्दी साहित्य में अमर कर दिया। गुलेरी जी का कुछ साहित्य ऐसा भी है जो अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है।

साहित्य साधना के क्षेत्र में गुलेरी जी हमारे सामने दो रूपों में आते है- सम्पादक के रूप में तथा कहानीकार के रूप में। सम्पादक के रूप में गुलेरी जी कई वर्ष तक जयपुर में 'समालोचक' निकालते रहे। इसी में उनके निबन्ध भी प्रकाशित हुए। उनके लेख चार प्रकार के मिलते हैं। १. साहित्यिक २.

सांस्कृतिक ३. सामाजिक और ४. आलोचनात्मक । गुलेरी जी वास्तव में अपने इस रूप की अपेक्षा दूसरे रूप में अधिक ख्याति प्राप्त कर सके है। वे एक सफल कहानीकार थे। प्रसाद, प्रेमचन्द, कौशिक आदि तत्कालीन प्रसिद्ध कहानीकारों से भिन्न अपनी कहानी–कला का परिचय गुलेरी जी ने 'उसने कहा था' नामक कहानी लिखकर दिया। इसी कहानी ने उनके साहित्यिक जीवन का स्तर अत्यन्त ऊँचा उठा दिया। इसकी गणना हिन्दी की श्रेष्ठतम कहानियों में की जाती है। कहानी–कला की दृष्टि से यह बेजोड रचना है।

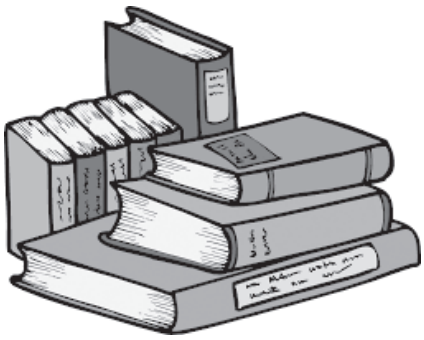

यह प्रथम महायुद्ध (१९१४–१९१८) की पृष्ठभूमि पर लिखी गई एक अत्यन्त मार्मिक कहानी है। इसमें तीन महान भावनाओं प्रेम, त्याग तथा कर्तव्यनिष्ठा को बडे उज्वल रूप में दिखाया है। कहानी का प्रारम्भ बाल व यौवन के मध्य की आयु में लडकी–लडके के परस्पर आकर्षण से होता है। प्रेम और कर्तव्य के पथ को पार करती हुई यह कहानी मृत्यु के निष्ठुर आघात में समाप्त होती है। प्रारम्भ, अन्त तथा अन्य समस्त दृष्टियों से यह एक सफल रचना है। उदात्त वीरता उदात्त प्रेम तथा उदात्त त्याग तीनों का समन्वित रूप में इस कहानी में देखने को मिलता है। इसके अतिरिक्त गुलेरी जी ने 'सुखमय जीवन' तथा 'बुद्धू का काँटा' नामक दो कहानियाँ और लिखी हैं। ये तीनों ही कहानियाँ जीवन की भिन्न–भिन्न परिस्थितियों के चित्र प्रस्तुत करती है। शास्त्रीय विधियों का कोई बन्धन इन कहानियों में नहीं है।

गुलेरी जी व्यावहारिक भाषा के पक्षपाती थे। उन्होंने अपनी भाषा में आवश्यकतानुसार संस्कृत, उर्दू तथा अंग्रेजी के शब्दों का भी प्रयोग किया है। संस्कृत भाषा का प्रयोग वे अधिकतर गम्भीर –विषयों के प्रतिपादन में करते थे। वहाँ उनकी भाषा संस्कृत के शब्दों से बोझिल हो जाती थी। वास्तव में गुलेरी जी अपनी भाषा का रूप विषय के अनुरूप ही स्थिर करते थे। उर्दू पदावली का प्रयोग विषय को रोचक बनाने के लिये ही किया जाता था।

भाषा के समान ही उनकी शैली भी व्यावहारिक है। संस्कृत के विद्वान होने के कारण उनके शब्द–चयन तथा वाक्य–विन्यास संस्कृत के प्रभाव से दूर नहीं हो सकते है। गम्भीर विषयों के प्रतिपादन में उनकी शैली गम्भीर हो उठी है जिसे आलोचनात्मक शैली कह सकते हैं।

दूसरे प्रकार की शैली परिचयात्मक शैली है जिसमें सीधी सरल भाषा में सरल विषयों का प्रतिपादन किया है। इसके शब्द–चयन में व्यावहारिकता तथा वाक्य–विन्यास में सरलता है। मुहावरों का प्रयोग भी यथास्थान किया गया है। इसमें व्यंग की झलक भी देखने को मिल जाती है। इस प्रकार के लेखों में प्रारम्भ में तो विनोद की मात्रा अधिक रहती है तथा मध्य में वे व्यंगात्मक हो जाते हैं। उदाहरणार्थ–

''हम तो शिवदास जी गुप्त की इस नई खोज की प्रशंसा में मग्न है। क्या बात है? क्या बढ के बात निकाली है। इधर हमारे हंसोड मित्र कह रहे है कि जाल–हंस कोई नहीं है, रोमन लिपि का चमत्कार है और संस्कृत साहित्य न जाननेवालों की अंग्रेजी या बँगला सूंघ कर 'गवेषणापूर्ण' लेख लिखने की लालसा पूर्ण करके पाँचवे सवार बनने की धुन का परिहासमात्र दुष्परिणाम है।''

अस्तु, गुलेरी जी की शैली सरल, स्पष्ट तथा व्यावहारिक है। शब्दावली सरल तथा विषयानुकूल है।

मुन्शी प्रेमचन्द

जन्म : १८८० मृत्यु : १९३६

प्रेमचन्द सच्चे अर्थों में हिन्दी उपन्यासों के जन्मदाता, पहले मौलिक उपन्यासकार तथा हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासकार थे। इसी कारण जनता ने उन्हें 'उपन्यास-सम्राट' की पदवी दी थी। प्रेमचन्द का जन्म बनारस (वाराणसी) के निकट लमही नामक गाँव में एक साधारण स्थिति के कायस्थ-परिवार में सन् १८८० ई. में हुआ था।

प्रेमचन्द उपन्यासकार, कहानीकार, निबन्ध लेखक और सम्पादक थे। उन्होंने अन्य भाषाओं के अनेक ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद भी किया था। उनकी सम्पूर्ण रचनाएँ इस प्रकार है-

उपन्यास - प्रेमा, वरदान,प्रतिज्ञा, सेवा-सदन, प्रेमाश्रम, निर्मला, रंगभूमि, गवन, कर्मभूमि, कायाकल्प, गोदान तथा अन्तिम अपूर्ण उपन्यास 'मंगल सूत्र।

कहानी संग्रह - प्रेमचन्द ने हिन्दी में लगभग तीन सौ कहानियाँ लिखीं थीं जो 'मानसरोवर' के नाम से आठ भागों में संग्रहीत हैं।

प्रेमचन्द अपने युग के एक अध्ययनशील, सजग, प्रगतिशील विचारधारा के साहित्यकार थे। प्रेमचन्द ने अपने निबन्धों द्वारा हिन्दी के साहित्यकारों का मार्गदर्शन किया था।

पंजीकरण क्र. MAHHIN/2010/48645

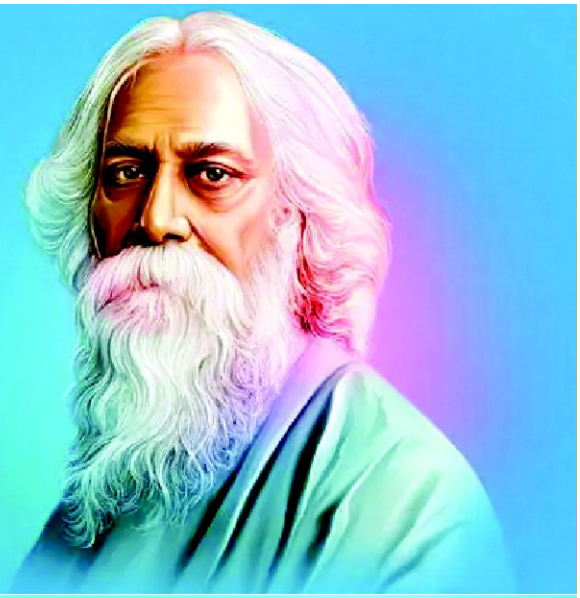

रवींद्रनाथ टैगोर

जन्म : ७ मई १८६१
मृत्यू : ७ अगस्त १९४१, कोलकता

जन गण मन अधिनायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
पंजाब सिंध गुजरात मराठा
द्रविड़ उत्कल बंग
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा
उच्छल जलधि तरंग
तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशिष मांगे
गाहे तव जय गाथा

जन गण मंगल दायक जय हे
भारत भाग्य विधाता
जय हे जय हे जय हे
जय जय जय जय हे

प्रेषक :
महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, हिंदी भवन,
१४३९, शुक्रवार पेठ, बाजीराव रोड, शेवडे गली,
पुणे ४११ ००२ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी : ०२०-२४४५३१५९
मोबाईल : ९७६३६२९२४३
ई-मेल : jgfagre@gmail.com
website - https://mrpspune.org/index

सेवा में,
श्री. _____
_____
_____